सम्पादकीय आओ जालाएँ द्वेष, दुर्गुण, अवांछनीयताओं और कुरीतियों की होली 2

युवा सक्रियता को नवगति प्रदान करते विविध सम्मेलन 4

छत्तीसगढ़ में युग चेतना विस्तार हेतु सम्पन्न हुए विशाल यज्ञीय आयोजन 7

शिव की भक्ति अपनी शक्ति को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करने की प्रार्थना है। - **श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी** 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 मार्च 2023

वर्ष : 35, अंक : 17

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 फरवरी 2023

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

हँसती-हँसाती जिन्दगी ही सार्थक है

समर्थ और स्वावलम्बी जीवन

हर व्यक्ति एक स्वतंत्र ईकाई है। उसे अपनी समस्यायें सुलझाने और प्रगति की व्यवस्था बनाने का ताना-बाना स्वयं ही बुनना पड़ता है। कठिनाइयाँ आती हैं और चली जाती हैं। सफलता मिलती है और प्रसन्नता की झलक झाँकी दिखाने के उपरान्त स्मृतियाँ छोड़ जाती है। कोई जीवन ऐसा नहीं बना, जिसमें सफलता-असफलता के, सुख-दुःख के ज्वार-भाटे न आते हों।

जीवन एक संग्राम है, जिसमें एक-एक कदम पर गुत्थियों को सुलझाते हुए चलना पड़ता है। पहाड़ चढ़ते समय पहला कदम जम जाने के उपरान्त दूसरे कदम के लिए जगह बनाने की सोचते हैं। नीचे कितनी गहरी खाई रह गई, इसे देखने से डर लग सकता है, ऊपर कितना चढ़ना बाकी है यह जानने के लिए चोटी की ऊँचाई आँकना हैरानी उत्पन्न करेगा। यात्रा के लिए अटूट धैर्य और साहस की आवश्यकता है।

हर समझदार आदमी को यह गाँठ बाँध कर रखनी चाहिए कि जन्म के समय वह अकेला आया था और मरने के समय भी चिता पर अकेले ही सोना है। अपना खाया अंग लगता है। अपने पढ़ने से ही शिक्षित बना जाता है। अपने बदले में सोने के लिए किसी और को नौकर रखा जाए तो नींद की आवश्यकता पूरी नहीं हो सकती। रोग की व्यथा स्वयं ही सहनी पड़ती है। पड़ोसी और संबंधी सहायता कुछ कर सकते हैं, पर चढ़ी हुई बीमारी को सहन करने के लिए वे अपने ऊपर नहीं ले सकते। नौकरों और सहायकों की बहुलता काम सरल तो बना सकती है, पर उन पर सब कुछ छोड़कर निश्चिंत हो जाना भूल है। इंजन बंद कर डिब्बों को दौड़ते हुए आगे स्टेशन पर जा पहुँचने का हुक्म देना समझदारी नहीं है।

मन का संतुलन जरूरी है

यों प्रत्यक्ष काम तो हाथ-पैर ही करते है, पर उनकी सक्रियता में उनके साथ जुड़ी रहने वाली मन की शक्ति का ही अधिकांश प्रभाव होता है। इसलिए छोटा-बड़ा जो भी काम करना हो, उसमें मन को सही स्थिति में संलग्न होना आवश्यक है। मन डगमगाया तो समझना चाहिए कि नाव का संतुलन बिगड़ा। बुद्धिमान वे हैं जो अपने मन को सही स्थिति में रखे रहते हैं। सड़क पर मोटर के पहिये दौड़ते हैं और सवारियाँ सीटों पर बैठती हैं, पर ढक्कन के नीचे रखा हुआ इंजन ही यात्रा पूरी करता है। तेल, पानी चुक जाए या इंजन गड़बड़ा जाए तो अच्छी तरह रंग, रोगन की हुई गाड़ी भी मंजिल तक नहीं पहुँच सकेगी।

कठिनाई या असफलता के लक्षण देखते ही हड़बड़ा जाना बुरी बात है। सफलता की हल्की-सी झलक झाँकी देखते ही फूले न समाने जैसी अहंकारी स्थिति बना लेना ओछेपन का लक्षण है। ऐसे आदमी बड़े काम कभी पूरा नहीं कर पाते। बिगड़ा हुआ संतुलन पूरी बात सोचने और मंजिल के अन्तिम चरण तक पहुँचने की स्थिति ही नहीं बनने देता।

कछुए और खरगोश की दौड़ में खरगोश इसलिए बाजी हारा कि ओछेपन ने उसे लगातार श्रम नहीं करने दिया और वह थोड़ी-सी सफलता को ही काम बन जाना मान बैठा। कछुआ इसलिए जीता कि अपनी धीमी चाल और लम्बी मंजिल की बात को भली प्रकार समझते हुए भी निराश नहीं हुआ और लगातार हिम्मत के साथ चलते रहने में ढीला नहीं पड़ा। धीरज और हिम्मत बनाए रहने वाला हर कछुआ बाजी जीतता है, जबकि उतावले खरगोश सक्षम होते हुए भी मात खाते हैं।

जीवन एक कर्मभूमि है

जीवन कर्मभूमि है। इसमें खिलाड़ियों जैसा मन लेकर ही उतरा जाता है। खिलाड़ियों के सामने पग-पग पर हार-जीत उछलती-कूदती रहती है। दोनों ही परिस्थितियों में वे समान मन से जुटे रहते हैं। हार जाने पर जीतने वाले से लड़ने, मरने पर उतारू नहीं होते, वरन् हाथ मिलाते और बधाई देते हैं। जीत जाने पर इस तरह इठलाकर नहीं चलते मानो कोई किला जीत कर आये हों। हारने वालों का तिरस्कार करना बेहूदों का काम है। वे कुशल खिलाड़ी नहीं माने जाते।

ओछे आदमियों की एक और पहचान है कि अपनी राई-रत्ती भर सफलता को दस जगह सुनाते और बढ़चढ़ कर गाते हैं। इसी प्रकार अपनी कठिनाइयों को भी दस जगह कहते हैं, ताकि उन्हें अधिक लोगों की सहानुभूति सुनने को मिले। इतने में ही कठिनाई का हल हो जाए तो बात दूसरी है, अन्यथा यदि वे यह आशा लगाएँ कि लोगों की सहानुभूति के साथ-साथ सहायता भी मिलेगी, लोग हाथ बँटायेंगे, तो यह मान्यता गलत है।

हारे हुए को अयोग्य और मूर्ख माना जाता है। कई लोग सफल होने वालों की प्रशंसा तो करते हैं, पर कठिनाइयों में फँसे हुए लोगों से बचने की कोशिश करते हैं। वे समझते हैं कि कहीं हमें भी उनकी सहायता के झंझट में न फँसना पड़े। सफलता की शेखी बघारने वाले को शेखीखोर और अहंकारी कहा जाता है। इसलिए दोनों ही प्रकार की चर्चा न केवल निरर्थक, वरन हानिकारक भी है। गंभीर व्यक्ति की मेहनत, जिम्मेदारी और सूझबूझ ही उसका सम्मान बढ़ाने के लिए पर्याप्त है।

सद्भाव रहे, अपेक्षा नहीं

आप किसी मित्र या सहयोगी से आड़े वक्त में सहायता की आशा करते थे, पर उसने सहानुभूति तक न दिखाई। ऐसी स्थिति में भी आवेश में आने या क्रोध करने की आवश्यकता नहीं। किन्हीं से आपके अच्छे सम्बन्ध रहे हों, इसे आप अपनी सज्जनता का तकाजा समझें। जितने अधिक लोगों के साथ आपका सद्भाव रहे उतना ही अच्छा है, पर इसका मूल्य कोई आपकी सहायता करके चुकाये, यह आवश्यक नहीं। आप अपने निज के बल पर विश्वास कीजिए। इतना साहस रखिये कि अपनी गुत्थियों को अपने बलबूते सुलझा लेंगे। न सुलझेंगी तो उस अनसुलझी स्थिति से भी काम चलायेंगे।

आपकी इच्छानुरूप सारी समस्याओं का हल निकलता रहे, यह आवश्यक नहीं। अपेक्षाओं से गुत्थियाँ और भी अधिक उलझ सकती हैं, प्रतिकूलताओं का दबाव और भी अधिक बढ़ सकता है, ऐसा अनुमान लगाकर चलेंगे तो आप जीवन संग्राम के सच्चे खिलाड़ी कहे जा सकते हैं। खिलाड़ी का पहला और आवश्यक गुण यह है कि वह हारती हुई मुख मुद्रा में भी संतुलित मन, स्थिर चित्त और दृढ़ निश्चय वाला होना चाहिए। उसके लिए तैश, आवेश किन्हीं भी परिस्थितियों में क्षम्य नहीं है। हर आदमी खिलाड़ी तो नहीं हो सकता, पर उसे समझदार तो होना ही चाहिए।

आवेश और अवसाद से बचें

बीमारियों को यदि दो भागों में विभक्त करना पड़े तो उनमें एक आवेशजन्य और दूसरी अवसादजन्य होंगी। रक्तचाप के उदाहरण से इसे और भी अच्छी तरह समझा जा सकता है। एक हाई ब्लड प्रेशर दूसरा लो ब्लड प्रेशर। मानसिक रोगियों में एक किस्म उत्तेजितों की है, दूसरी अवसाद ग्रस्तों की। अवसाद ग्रस्त अर्थात् निराश, उदास, आलसी, अकर्मण्य, डरपोक, कायर आदि। उत्तेजितों में क्रोधी, आवेशग्रस्त, जल्दबाज, झगड़ालू आदि आते हैं। दोनों ही प्रकृति वाले अस्वाभाविक जीवन जीते और अर्ध विक्षिप्त कहलाते हैं। यदि उनके सामने कोई गुत्थी या कठिनाई आए तो वे उसे हल करना तो दूर, अपनी मानसिक अस्त-व्यस्तता के कारण दूनी बढ़ा लेते हैं। ऐसे लोग सफलता के अवसर सामने हों तो उन्हें जल्दी ही गँवा देते हैं।

शारीरिक रोगों के मूल में भी इन दो को गिना जा सकता है। डरपोक आदमी अपनी भीरुता और कुकल्पना के कारण ही बेमौत मरते हैं। एक बार ब्रह्माजी ने मौत को दो हजार आदमी मार कर लाने का आदेश दिया। मौत जब वह वापस लौटी तो चार हजार साथ थे। जवाब तलब किया गया तो मौत ने सफाई दी कि उसने तो दो हजार ही मारे, शेष तो मरने के डर से भयभीत होकर अपने आप मर गये और उसके साथ चल दिये।

आवेशग्रस्तों के बारे में भी यह बात सही कही जा सकती है। ठंडक लगने से जितने समय में मौत होती है, आग में झुलसने पर उससे कहीं जल्दी प्राण निकल जाते हैं। क्रोधी अपने रक्त-मांस को ही नहीं, जीवनी शक्ति को भी निरन्तर जलाता और अपने को खोखला बनाता रहता है।

क्रोधी आदमी समझता है कि वह सत्य का पक्षपाती है। उसे जो लोग गलती करते हैं उन पर गुस्सा आता है। यह शब्द कहने-सुनने से निर्दोष मालूम पड़ते हैं, पर हैं तथ्यों से विपरीत। गलती करने वाले को क्रोध करने से कैसे दंडित किया जा सकता या सुधारा जा सकता है, यह समझ से बाहर की बात है। क्रोध में प्रकट हुआ तैश और बोले हुए कटु वचन सर्वप्रथम उसी व्यक्ति को दोषी ठहराते हैं और उसके विरोधी बन जाते हैं। इस प्रकार वह अनायास ही जीती हुई बाजी हार जाता है। समस्या का निराकरण हुआ या नहीं, यह बाद की बात है, उसे पहले ही अपने स्वभाव की बदनामी, जीवनी शक्ति की घटोत्तरी और समस्या को सुझा सकने की मानसिक दक्षता में कमी आदि अनेक हानियाँ झेलनी पड़ती हैं। इसी प्रकार संकोची, डरपोक व्यक्ति भी अपनी बात स्पष्ट न कर पाने के कारण निर्दोष होते हुए भी दोषी बनते रहते हैं।

शरीर की स्थिरता, आर्थिक सुव्यवस्था, परिवार की सुख-शान्ति, गुत्थियों का समाधान, प्रगति का सुनियोजन आदि कितनी ही बातें जीवन की सफलता के लिए आवश्यक मानी जाती हैं। उन सबके मूल में मानसिक संतुलन की आवश्यकता है। हँसती-हँसाती आदतें बनाकर ही हम जीवन-रथ को प्रगति पथ पर सही रीति से अग्रगामी कर सकते हैं।

अखण्ड ज्योति, मार्च 1988 (पृष्ठ 56-88) से संकलित, सम्पादित।

आओ जलाएँ द्वेष, दुर्गुण, अवांछनीयताओं और कुरीतियों की होली

प्रहलाद प्रतीक है सत्य, ईश-निष्ठा, सद्गुणों का, जो हर चुनौती और कठिनाइयों के बीच भी सुरक्षित रहता है। **हिरण्यकश्यपु** एवं **होलिका** प्रतीक हैं असुरता, अहंकार, अवगुण, आतंक के, जिन्हें ईश्वरीय वरदान भी बचा नहीं सकते।

होली शुचिता, स्वच्छता, समता, ममता, एकता का राष्ट्रीय पर्व है। समाज की सुख-शान्ति और राष्ट्र की प्रगति-समृद्धि इन्हीं गुणों पर निर्भर है। ये सद्गुण अध्यात्म की बुनियाद हैं। यदि ये जीवन में प्रतिष्ठित हो जाएँ तो सफलता और सिद्धियों के द्वार सहज ही खुलते चले जाते हैं। अंतःकरण निर्मल हो तो ईश्वर से कुछ माँगने की आवश्यकता ही नहीं है। निर्मल मन में साक्षात ईश्वर का वास होता है। ऐसे हृदय में ईश्वरीय अनुदान सहज रूप से प्रवाहित होने लगते हैं।

होली पर्व मन की मलिनता तथा सामाजिक अवांछनीयताओं को दूर करने की प्रेरणा देता है। इस कार्य के लिए छोटे-मोटे नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर के बड़े अभियान चलाने की आवश्यकता है। समय की माँग है कि आज प्रत्येक व्यक्ति होली का दर्शन समझे, कम से कम स्वयं गंदगी न करने और गंदगी न होने देने का संकल्प अपने जीवन में उतार ले। यदि ऐसा होता है तो होली पर्व मनाना सार्थक हो जाएगा।

होली का दर्शन

होलिका दहन की कथा सर्वविदित है। हिरण्यकश्यपु ने भगवान से ऐसे विचित्र वरदान प्राप्त कर लिए थे कि वह अपने को अजेय, अमर मानने लगा। उसका अहंकार इतना बढ़ गया कि उसने स्वयं को ही भगवान घोषित कर दिया और अपने साम्राज्य में भगवान की भक्ति पर प्रतिबंध लगा दिया। भगवान की लीला देखें कि स्वयं उसके बेटे प्रहलाद ने ही उनके इस अहंकार को तोड़ा। भगवान श्रीहरि के प्रति अनन्य आस्था रखने वाला प्रहलाद हर क्षण अपने नारायण की भक्ति में डूबा रहता था।

प्रहलाद की ईश्वर-भक्ति प्रजा में हिरण्यकश्यपु की इच्छा के विपरीत संदेश दे रही थी, इसलिए उसने प्रहलाद को मारने के कई उपाय किए, लेकिन ईश्वर की कृपा से वह मरा नहीं। अंत में होलिका, जिसे किसी भी प्रकार से न जलने का वरदान भगवान से मिला था, उसकी गोद में प्रहलाद को बिठा कर उसे भस्म करने के प्रयास हुए। भगवान की लीला देखें कि होलिका तो भस्म हो गई, लेकिन भक्त प्रहलाद नारायण-नारायण कहते हुए धधकती लपटों के बीच से बाहर आ गए।

होली एक ऐसा पर्व है जो बुराइयों को भस्म कर हँसी-खुशी का वातावरण बनाने का संदेश देता है। इसमें अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा जैसी सारी दूरियाँ सिमट जाती हैं, समरसता और सद्भाव का सुन्दर वातावरण विनिर्मित होता है। यह मनोविनोद के सहारे मनोमालिन्य मिटाने का पर्व है। यह आपस के मनमुटाव को भुलाकर एक-दूसरे के गले मिलने का पर्व है।

प्रहलाद और हिरण्यकश्यपु के दृष्टांत से देखा जाए तो होली का सबसे बड़ा संदेश अहंकार पर आस्था की और असुरता पर देवत्व की विजय का ही है। जिसके मन में अपने सृजेता के प्रति गहन आस्था है, जो उसे सर्वव्यापी और न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन के अनुरूप जीवन जीता है, उसके मन में सदैव ईश्वर का वास होता है। बड़ी से बड़ी कठिनाइयाँ और चुनौतियाँ उसका कुछ नहीं बिगाड़ पातीं। परम पूज्य गुरुदेव कहा करते थे कि हम बॉडीगार्ड बनकर सदा तुम्हारे साथ रहेंगे। यह सोलह आने सच है कि जिनका भगवान पर विश्वास है, भगवान सदा उनके साथ रहते हैं।

भक्ति का तात्पर्य जप, तप, अनुष्ठान की संख्या से नहीं है, जीवन साधना से है। परम पूज्य गुरुदेव के विचारों की दृष्टि से आज के समय में युग निर्माण के सूत्र-सत्संकल्पों को जीवन में धारण करने की साधना सच्ची ईश्वर-भक्ति है। सबके हित में अपना हित समझते हुए सबकी भलाई का ध्यान रखने वाला ईश्वर का सच्चा भक्त है। भक्ति का अर्थ है मन से भ्रम, भय, भेदभाव को दूर करना। लोभ, मोह, अहंकार जैसे अवगुणों को त्यागकर विवेकपूर्वक जीवन जीने का सतत अभ्यास करना ईश्वर भक्ति है। उपासना, साधना, आराधना इन्हीं मान्यताओं को दृढ़ करने और अपनी आस्था को प्रगाढ़ करने के साधन हैं।

वर्तमान युग की विसंगतियाँ

आज की दुनियाँ देखने में अत्यंत मनमोहक दिखाई देती है। विज्ञान के सहारे मनुष्य ने ऐसी-ऐसी सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हैं, जिनके कारण लोगों का व्यवहार जाने-अनजाने हिरण्यकश्यपु जैसा होता जा रहा है। मनुष्य की बनाई दुनियाँ भगवान के बनाए संसार से कहीं ज्यादा रंगीन और आकर्षक है। आज मनुष्य ऊँची-ऊँची उड़ान भर सकता है, घर बैठे सारी दुनियाँ देख सकता है, सात समुंदर की दूरियाँ भी अब पड़ोस जैसी नजर आती हैं, आसमान के तारे तोड़कर लाना अब कवि की कल्पना नहीं रह गई। मनुष्य चाहे तो पल भर में सारी धरती को धूल-धूसरित कर सकता है...।

इन असाधारण सफलताओं तथा सिद्धियों ने जहाँ मनुष्य की सामर्थ्य बढ़ाई है, वहीं उसकी आस्थाओं को बुरी तरह चोट पहुँचाई है। प्रश्न सम्राट और शासकों का नहीं है, बात यह है कि सामान्य मानव भी आज ईश्वरीय अनुशासन और विधान को भूलकर विज्ञान की सिद्धियों के वशीभूत होता जा रहा है। जहाँ राष्ट्र अपना वर्चस्व सिद्ध करने में लगे हैं, वहीं तथाकथित धार्मिकता अधर्म की राह अपनाकर मानव मन की खाइयाँ चौड़ी करती दिखाई दे रही है। विज्ञान प्रकृति के नियमों की अनदेखी कर सुख-सुविधाएँ जुटाने में लगा है और मानवता के लिए नित नई मुसीबतें खड़ी कर रहा है। भौतिकता की चकाचौंध में सामान्य मानव की आस्थाएँ भी डाँवाडोल हो गई हैं। इस संसार में **'सादा जीवन-उच्च विचार'** के सूत्र को अपनाते हुए बेहतर जिंदगी जीना संभव है, यह विश्वास दिन-प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा है। अनास्था के इस सामूहिक वातावरण में व्यक्ति अवांछनीयता को अपनाने के लिए विवश-सा दिखाई देता है।

प्रहलाद प्रतीक है सत्य, ईश-निष्ठा, सद्गुणों का, जो हर चुनौती और कठिनाइयों के बीच भी सुरक्षित रहता है। हिरण्यकश्यपु एवं होलिका प्रतीक हैं असुरता, अहंकार, अवगुण, आतंक के, जिन्हें ईश्वरीय वरदान भी बचा नहीं सकते।

होली मानवी काया में बैठे इस प्रहलाद को जगाने का पर्व है। यह अंतःकरण में ईश्वर के प्रति विश्वास को दृढ़ता प्रदान करता है। कहा जाता है कि कुम्हार के जलते आँवे से एक बिल्ली के बच्चे को सुरक्षित निकलते देखकर प्रहलाद के मन में यह विश्वास दृढ़ हुआ था कि होलिका की अग्नि उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाएगी। उसी तरह होली लोगों में आध्यात्मिक आस्थाओं को जगाने का पर्व है। यह विश्वास जगाने का पर्व है कि यदि मन निर्मल हो, इंसान सच्चाई और अच्छाई का रास्ता अपना ले तो संसार की बड़ी से बड़ी चुनौतियों के बीच भी वह भय और तनाव रहित उत्कृष्ट जीवन जी सकता है।

अवसर का लाभ उठाएँ

होली की प्रमुख प्रेरणा अंतःकरण को निर्मल कर, ईश्वर के न्यायकारी स्वरूप एवं संरक्षण पर दृढ़ विश्वास रखते हुए आदर्शोन्मुख जीवन जीने की है, तथापि आज लौकिक जीवन में यह पर्व सामाजिक स्वच्छता और मानवीय एकता व समरसता को प्रोत्साहित करता दिखाई देता है। यह उसके मूल उद्देश्य की ही पूरक प्रेरणाएँ हैं। हृदय निर्मल होगा तो समाजिक गंदगी रह ही नहीं सकती और सामाजिक स्वच्छता का अभियान चलाना मानवीय भावनाओं के परिष्कार का ही अभियान है।

समाज में अनेक प्रकार की बुराइयाँ विद्यमान हैं। विडम्बना यह है कि जो पर्व सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए मनाया जाता है, उसी पर्व की परम्पराओं में अनेक विसंगतियाँ जुड़ गई हैं। अच्छा हो कि अवांछनीय परम्पराओं के विरुद्ध जनजागरण अभियान को प्रखर किया जाए और स्वस्थ परम्पराओं के साथ इसे मनाते हुए राष्ट्रीय उत्थान एवं मानवता के कल्याण के प्रयास किए जाएँ।

अखिल विश्व गायत्री परिवार देश के हर क्षेत्र में नशामुक्ति, अश्लीलता निवारण, अस्वच्छता निवारण, नारी स्वाभिमान जैसे अनेक अभियान पूरे जोश और उल्लास के साथ प्रभावशाली ढंग से चला रहा है। यहाँ उन्हीं कुछ बिन्दुओं का पुनःस्मरण कराया जा रहा है। समय रहते सक्रियता अपनाई जाए तो हम पर्व की प्रेरणाओं को और भी प्रखरता के साथ समाज के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण : होली के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया जाना चाहिए। देखा गया है कि अनेक स्थानों पर होलिका दहन के लिए जलाऊ लकड़ी बड़ी मात्रा में मोल खरीदी जाती है। अच्छा हो कि होली का आकार बड़ा करने की होड़ न लगाई जाए, मूल्यवान जलाऊ लकड़ी का कम और अवांछनीय कूड़े-करकट का प्रयोग अधिक से अधिक मात्रा में किया जाए। इसे घर-घर से इकट्ठा करने का अभियान चलाया जाए। हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में यही आदर्श परम्परा रही है। घरों से चोरी कर लकड़ी या फर्नीचर लाना और होलिका में रख देना भी समय के साथ पनपी एक बुराई है, जिसे नहीं अपनाया जाना चाहिए।

यदि संभव हो तो होलिका पूजन के समय पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करने के लिए हरीतिमा पूजन का क्रम जोड़ा जाए। होलिका दहन से पूर्व देववृक्षों से युक्त गमले रखकर उनका पूजन किया जा सकता है।

गौसंवर्धन : मूल्यवान लकड़ी जलाने की अपेक्षा कण्डों की समिधाओं का प्रयोग किया जा सकता है। इससे गौधन की उपयोगिता बढ़ाने और परोक्ष रूप से गौसंवर्धन करने का संदेश समाज में जाएगा। अच्छी बात है कि आजकल यज्ञ में गोबर की समिधाओं का प्रयोग प्रचलन में आता जा रहा है।

अश्लीलता : समाज में आधुनिकता के नाम पर बढ़ती अश्लीलता एक सामाजिक बुराई है। अच्छा हो विवेक बुद्धि अपनाने की बजाय प्रवाह में बहने वाले समाज को कामुकता और कुसंस्कारों से बचाया जाए। स्वतंत्रता का अधिकार सभी को है, लेकिन ऐसी स्वच्छन्दता जो समाज पर दुष्प्रभाव

डाले, उसे उचित नहीं माना जा सकता। आज जब हम गौमाता के सम्मान की लड़ाई लड़ रहे हैं तो अपनी माता-बहिनों के सम्मान का ध्यान तो रखा ही जाना चाहिए। इस दृष्टि से गायत्री परिवार द्वारा घर-घर से गंदे पोस्टर और अश्लील साहित्य इकट्ठा कर उनका होली में दहन करना एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणादायी अभियान है।

अभद्रता : होली मनाने के समय भाभियों के साथ भद्दे मजाक, फूहड़ गीत, गाली-गलौच की जो परम्परा चल पड़ी है, उसे रोका ही जाना चाहिए।

नशा : नशा अपने आप में बहुत घातक है। होली जैसे पवित्र पर्व पर शराब पीकर हुड़दंग करना उचित नहीं। देखा गया है कि नशा समाज में प्रेम और सद्भाव बढ़ाने की बजाय तरह-तरह के विवाद ही बढ़ाता है। इससे बचा जाना चाहिए।

अस्वच्छता : होली अबीर, गुलाल, चंदन, रोली, प्राकृतिक रंग जैसे परस्पर प्रेमभाव बढ़ाने वाले साधनों के साथ खेली जानी चाहिए। इसकी जगह पक्के रंग, ऑइल पेण्ट, चमड़ी जला देने वाले रासायनिक पदार्थ, कीचड़ जैसी गंदगी का प्रयोग करना होली की मूल भावना के सर्वथा विपरीत है। यह प्रेम नहीं, परस्पर वैमनस्य बढ़ाने वाला है। इस कुत्सित परम्परा के विरुद्ध जनजागरण अभियान चलाने की आवश्यकता है।

विविध जनजागरण अभियान

गायत्री परिवार होली के पावन अवसर पर हर क्षेत्र में जनजागरण अभियान चलाता ही है। अपने समाज सुधार परक नैतिक दायित्वों को निभाते हुए इसे अधिक प्रेरणादायी बनाने के प्रयास हमें करने होंगे।

जनजागरण : कुछ दिन पूर्व से ही प्रभात फेरी व जनजागरण यात्राएँ आरम्भ की जा सकती हैं। परिपत्र छपवाकर घर-घर बाँटे जा सकते हैं।

विद्यार्थियों से सम्पर्क : विद्यालयों में सम्पर्क कर विद्यार्थियों में जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। उन्हें दैनंदिन जीवन में भी नशा, गाली गलौच, अभद्र व्यवहार न करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

यज्ञभाव : होलिका दहन सार्वजनिक यज्ञ है। गायत्री परिवार का पर्व पूजन विधान अपनाया जाए तो नृसिंह पूजन, मातृभूमि पूजन, त्रिधा समता देवी पूजन, क्षमावाणी, नवान्न यज्ञ जैसे उपक्रमों से पर्व का समग्र-स्वस्थ संदेश समाज में पहुँचेगा।

अश्लीलता-अवांछनीयता दहन : होलिका दहन क्षेत्र में तमाम बुराइयों के पोस्टर्स प्रदर्शनी लगाकर उन्हें त्यागने का उत्साह श्रद्धालुओं में जगाया और फिर संकल्प या प्रतीकात्मक रूप से उनका होलिका में दहन किया जा सकता है।

हास-परिहास : धूलि वंदन के दिन हास-परिहास युक्त कवि सम्मेलन व मनोविनोदपूर्ण कार्यक्रमों से वातावरण उल्लासमय बनाया जा सकता है।

चलो इस वर्ष श्रेष्ठ, स्वस्थ परम्पराएँ अपनाएँ, उद्देश्यपूर्ण व आनन्ददायी होली मनाएँ।

मानवता के उत्थान के लिए समर्पित है देव परिवार

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की निरंतर बढ़ती लोकप्रियता

प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला में 40 बहिनों की भागीदारी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

दिनांक 3 फरवरी 2023 को गायत्री शक्तिपीठ गोमती नगर में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान केअन्तर्गत प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला सम्पन्न हुई। इसमें लखनऊ एवं बाराबंकी की 40 बहिनों ने भाग लिया। उन्हें गर्भवती का आहार, दिनचर्या, योग, गर्भ संवाद विषयों की वैज्ञानिक तथ्यों से युक्त जानकारी दी गई। गर्भ संस्कार की वैज्ञानिकता और प्रचार-प्रसार सम्बन्धी प्रशिक्षण भी दिया गया।

कार्यशाला का समापन संकल्प दीपयज्ञ के साथ हुआ। इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों ने गायत्री शक्तिपीठ प्रबंधन तंत्र द्वारा की गई व्यवस्थाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

गोमती नगर शक्तिपीठ पर प्रशिक्षण ले रही बहिनें

अस्पतालों में गर्भ संस्कार कराने का सफल प्रयोग

सतना। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार सतना की बहिनों द्वारा हॉस्पिटलों में सतत चलाया जा रहा गर्भ संस्कार का कार्यक्रम लोकप्रिय होता जा रहा है। इसके अन्तर्गत दिनांक 5 फरवरी 23 को हंसराज हॉस्पिटल, सतना में डॉ. मनीषा सोइन की उपस्थिति में नौ बहनों का गर्भ संस्कार संपन्न किया गया। इस अवसर पर डॉ. सोइन जी ने गर्भ संस्कार कराने वाली बहिनों से कहा कि यह संस्कार आपके शिशु के लिए कवच के समान है। सभी बहिनों को नित्य बलि वैश्व यज्ञ, युग साहित्य का स्वाध्याय तथा गायत्री मंत्र लेखन करने की प्रेरणा दी गई।

लायंस क्लब सतना की सदस्य श्रीमती गीता सिंह इस अवसर पर उपस्थित थीं। वे गायत्री परिवार की संस्कार परम्परा से बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने इसे और अधिक जानने-समझने की इच्छा के साथ कन्या छात्रावास में जन्मदिन संस्कार कराने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने महिला मण्डल की कार्यकर्त्ता के रूप में नियमित सेवाएँ देने का आश्वासन दिया।

हंसराज हॉस्पिटल सतना में गर्भ संस्कार कराती बहिनें

सभी वर्गों को प्रभावित करती है संस्कार की वैज्ञानिकता

कोटा। राजस्थान

दिनांक 29 जनवरी को गायत्री शक्तिपीठ कोटा में गर्भोत्सव संस्कार समारोह आयोजित किया गया। दाऊदयाल जोशी आयुर्वेदिक चिकित्सालय अधीक्षक डॉक्टर अंजना शर्मा ने माताओं द्वारा किए गए व्यवहार का गर्भस्थ शिशु पर पड़ने वाले प्रभाव का विवेचन ऑडियो विजुअल माध्यमों के साथ समझाया। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. अनुपमा चतुर्वेदी ने गर्भावस्था में रखी जाने वाली सावधानियों एवं पोषण युक्त खाद्य पदार्थों की जानकारी दी।

42 बहिनों के संस्कार हुए, 11 मुस्लिम बहिनें भी शामिल

कोटा में गर्भ संस्कार कराती हिन्दू-मुस्लिम बहिनें

11 मुस्लिम महिलाओं सहित 42 गर्भवती बहिनों ने गर्भ संस्कार कराए। सभी ने गर्भपूजन के विशेष कर्मकाण्ड के पश्चात् दीपयज्ञ में भाग लेते हुए श्रेष्ठ संतान की कामना के साथ गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र से आहुतियाँ अर्पित कीं। कार्यक्रम का संचालन ऊषा राठौड़, निधि चौधरी एवं रिचा पांडे ने किया।

पीड़ित मानवता की सेवा के लिए स्वास्थ्य परीक्षण एवं रक्तदान शिविर

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में हर समय रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित करता है गायत्री परिवार

कानपुर। उत्तर प्रदेश : प्रज्ञा परिवार श्याम नगर कानपुर ने गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में 29 जनवरी को ओम पैलेस, श्याम नगर कानपुर में रक्तदान शिविर आयोजित किया। इसमें 50 लोगों ने रक्तदान किया। उल्लेखनीय है कि यह शाखा प्रत्येक गणतंत्र दिवस एवं स्वतंत्रता दिवस पर रक्तदान शिविर आयोजित करती है। इस वर्ष 26 जनवरी को वसंत पर्व होने के कारण शिविर 29 जनवरी को आयोजित किया गया था। श्री सुरेश चंद्र जोशी ने बताया कि प्रज्ञा परिवार जरूरतमंदों के लिए हर दिन 24 घण्टे रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित करता है।

स्वास्थ्य परीक्षण एवं रक्तदान 30 यूनिट रक्तदान 50 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण

उज्जैन में रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देते गणमान्य

उज्जैन। मध्य प्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर 5 फरवरी को रक्तकोष जिला चिकित्सालय उज्जैन के सहयोग से स्वास्थ्य परीक्षण एवं रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इसमें 30 यूनिट रक्तदान हुआ। 50 से अधिक लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। सुदूर शहरों से आए मरीजों को आवश्यक प्राथमिक उपचार देने के उपरांत अपने क्षेत्र में निःशुल्क परामर्श व उपचार के लिए चिकित्सकों के सम्पर्क सूत्र भी दिए गए। रक्तदान करने वालों को जिला चिकित्सालय की ओर से प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

गाँव-गाँव जाकर कर रहे हैं सेवा

उज्जैन में रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देते गणमान्य

मुजफ्फरपुर। बिहार : चौमुख बोचा प्रखण्ड के युवा क्रान्ति दल ने 29 जनवरी को निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया। इसके अन्तर्गत 102 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें दवाएँ दी गईं। डॉ. संदीप तुलस्यान, डॉ. श्रीकान्त भट्ट, संजय ठाकुर, सुमन ओझा, कृष्ण मुरारी सिंह, प्रखर, ओजस्वी के सहयोग से यह शिविर सम्पन्न हुआ। बाल निर्माण एवं स्वास्थ्य सेवाओं के लिए अहर्निश सक्रिय एवं समर्पित कार्यकर्त्ता डॉ. श्रीकान्त भट्ट ने बताया कि इस अवसर पर बाल संस्कार शाला का भी आयोजन किया गया, जिसमें 67 बच्चों ने भाग लिया। उन्हें जीवन निर्माण की महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं के साथ मिठाइयाँ एवं वृक्षारोपण के लिए पौधे भी दिए गए।

लक्ष्य एक लाख पौधारोपण, अब तक लगाए 10,000

जहानाबाद। बिहार

विद्यालय में 100 पेड़ों की पौध लगाई

86वें वृक्षारोपण सप्ताह में उच्च विद्यालय घोसी के प्रांगण में पचहत्तर पौधे अशोक के तथा पच्चीस पौधे जामुन के लगाए गए। इस अवसर पर श्री बचन देव कुमार ने बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस-5 जून 2021 के बाद से उनका युवा संगठन करीब दस हजार पौधे लगा चुका है। इस अभियान में एक सौ से ज्यादा युवाओं की सक्रियता रही है। पूरे जिले में एक लाख वृक्ष लगाने का उनका लक्ष्य है।

अधिकारियों की भागीदारी

इससे पूर्व 15 जनवरी को 85 वाँ साप्ताहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम जहानाबाद ऑफिसर्स कॉलोनी, जहानाबाद में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर एडीएम सुश्री सुधा गुप्ता, एसडीसी श्रीमती रत्ना प्रियदर्शिनी, ओएसडी डीएम शम्स जावेद, डीएसपी पटना निगरानी आकाश कुमार ने पौधारोपण अभियान में हिस्सा लिया। अधिकारियों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए गायत्री परिवार की सक्रियता की सराहना करते हुए कहा कि यह कार्य केवल सरकारी प्रयत्नों से ही संभव नहीं है।

दिनांक 5 फरवरी को मखदुमपुर प्रखंड के आदर्श ग्राम पलेया में वृक्षारोपण किया। यह कार्यक्रम गाँव में सूर्य मंदिर स्थापना के तृतीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर यज्ञ हवन के साथ सम्पन्न किया गया।

आओ कुछ अच्छा करें

सेवा की हूक बच्चों का जीवन सँवारने में जुट गए हैं कृपाशंकर शर्मा

बिहार राज्य में पश्चिम चंपारण जिले के आदिवासी क्षेत्र में नर्सिंग अधिकारी के पद पर कार्यरत श्री कृपा शंकर शर्मा इन दिनों 'आओ कुछ अच्छा करें' के नाम से एक टीम बना कर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता पैदा करने के कार्य में जुट गए हैं। यह टीम अपनी नियमित सेवाओं के उपरांत समय निकाल कर गाँवों में जाती है और वहाँ के बच्चों और उनके अभिवावकों को एकत्र कर उन्हें अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए प्रेरित करती है। बच्चों को स्कूल जाने तथा अपने शरीर, घर और आसपास में स्वच्छता रखने के लिए प्रेरित किया जाता है।

श्री कृपा शंकर शर्मा ने बताया कि उनकी टीम ने गाँव कोल्हुआ की दलित बस्ती सूर्यपुर बकिया में तथा बड़गाँव, बनचहरी, अवरहिया जैसे अछूते गाँवों में यह अभियान सफलतापूर्वक चला रखा है। उन्होंने कहा कि गाँववालों को समझाना आरम्भ में आसान नहीं होता, लेकिन जब वे गायत्री परिवार के उद्देश्यों को समझ लेते हैं तो फिर अपने बच्चों को स्कूल भेजने, साफ-सफाई रखने आदि के लिए बड़ी प्रसन्नतापूर्वक तैयार हो जाते हैं और ऐसा करने का आश्वासन देते हैं। इन गाँवों में गायत्री परिवार की टीम ने बच्चों और बुजुर्गों में ऊनी टोपियाँ भी बाँटीं।

श्री कृपाशंकर शर्मा भरतपुर (राजस्थान) में कुम्हेर तहसील के अत्यंत प्राणवान कार्यकर्त्ता प्रज्ञा पुराण कथावाचक श्री श्यामसुंदर शर्मा के भतीजे हैं, जो लगभग 80 वर्ष की उम्र में भी साइकिल से गाँव-गाँव में क्रान्तिकारी जनजागरण अभियान चला रहे हैं। उनकी ही कर्मठता और गुरुभक्ति से प्रभावित होकर श्री कृपाशंकर जी के मन में समाजसेवा की हूक जागी है।

नारी स्वावलम्बन और सशक्तीकरण

स्वयं सहायता समूह बनाकर दिया जा रह है प्रशिक्षण

महिन्द्रा सेज जयपुर। राजस्थान

इस वर्ष नारी सशक्तीकरण वर्ष के संदर्भ में महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी सेज, जयपुर में गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्त्ता श्रीमती ममता त्रिपाठी ने बहिनों को स्वावलम्बी एवं आत्मविश्वास सम्पन्न बनाने के लिए प्रशंसनीय सेवाएँ प्रदान कीं। उनके द्वारा ग्रामीण परिवेश में रहने वाली बहिनों के स्वयं सहायता समूहों का गठन कर उन्हें सिलाई, हैण्डीक्राफ्ट, ब्यूटीशियन, फैशन डिजाइनिंग आदि का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा रहा है। साथ ही प्रशिक्षण प्राप्त कर रही बहिनों को गायत्री मंत्र लेखन एवं विभिन्न प्रकार की जीवन साधनाओं की प्रेरणा देकर उनका आत्मविश्वास बढ़ाया जा रहा है, उन्हें नकारात्मक सोच से उबारकर जीवन में ऊँचा उठने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसी क्रम में विगत 3 माह में ग्राम कलवाडा, नेवटा, भमौरिया की 51 महिलाओं को गायत्री मन्त्र लेखन अभियान से जोडा गया।

गायत्री मंत्र लेखन साधना करती हैं प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली बहिनें

किरार समाज ने अपनाई प्रगतिशील परम्परा

मृतक भोज नहीं किया, समाज के उत्थान के लिए दान दिया

पिपरिया, होशंगाबाद। मध्य प्रदेश

अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के जिला अध्यक्ष श्री भगवत पटेल ने अपने पिता स्व. दर्शन सिंह पटेल के मरणोपरांत समाज में प्रगतिशील परम्पराओं को प्रतिष्ठित करने की प्रशंसनीय पहल की है। गायत्री परिवार के श्री सुबोध बारोलिया ने गायत्री यज्ञ के साथ श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न कराई। श्री भगवत पटेल ने पिता की स्मृति में वृक्षारोपण किया और समाज कल्याण के लिए एक लाख रुपये की राशि दान की।

इस अवसर पर चौधरी दर्शन सिंह ने इस प्रगतिशील परम्परा का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि समाज का हर व्यक्ति समाज के भविष्य के प्रति जागरूक हो। कुरीतियों के मकड़जाल से स्वयं को मुक्त करे और समाज के अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करे। उन्होंने समाज में व्याप्त रूढ़ियों को समूल समाप्त करने का आह्वान उपस्थित समाज के बंधुओं से किया।

युवा सक्रियता को नवगति प्रदान करते विविध सम्मेलन

प्रान्तीय संगठन द्वारा वर्ष-2023 की कार्ययोजना पर मंथन

युग सृजेता समारोह श्रावस्ती के सहयोगियों का अभिनंदन

प्रांतीय कार्यकर्त्ता संगोष्ठी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

राजधानी लखनऊ में 5 फरवरी 2023 को प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश की प्रांतीय गोष्ठी संपन्न हुई। मीडिया प्रभारी अनुराग मौर्य ने बताया कि लखनऊ के गाँधी भवन प्रेक्षागृह में आयोजित गोष्ठी को शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री के.पी. दुबे और श्री आशीष सिंह ने संबोधित किया। इस गोष्ठी में वर्ष 2023 के प्रान्तीय स्तर के प्रमुख अयोजनों तथा जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के लक्ष्य पर विचार मंथन हुआ।

श्री के.पी. दुबे ने प्रांतीय युग सृजेता समारोह श्रावस्ती-2022 के संकल्पों का पुनःस्मरण कराते हुए परम वंदनीया माता जी के जन्म शताब्दी वर्ष 2026 से जुड़े उत्तर प्रदेश के प्रांतीय उद्देश्य और लक्ष्य की विशेष जानकारी दी। श्री आशीष सिंह ने युवा मंडलों के गठन और संचालन तथा प्रेम और सद्भाव बढ़ाने संबंधी विशेष मार्गदर्शन दिया।

वर्ष-2023 की कार्ययोजना के कैलेण्डर का विमोचन करते केन्द्रीय प्रतिनिधि

श्री प्रभाकर सक्सेना ने 13 से 17 दिसंबर 2023 की तिथियों में सुल्तानपुर में होने जा रहे प्रांतीय कन्या कौशल शिविर के स्वरूप की जानकारी दी। युवा प्रकोष्ठ झांसी के संयोजक श्री संजीव खरे ने 1,2,3,4 दिसम्बर 2023 की तिथियों में होने जा रहे प्रांतीय युग सृजेता समारोह झाँसी को सफल बनाने का आह्वान किया।

केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने युग सृजेता समारोह श्रावस्ती को सफल बनाने वाले सक्रिय सहयोगियों और कार्यकर्ताओं का सद्वाक्य एवं स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनंदन किया।

युवा संयोजक श्री जय प्रकाश वर्मा द्वारा प्रस्तुत स्वरचित आभार गीत 'सृजन सैनिको आज तुमको नमन है... सुनकर सभी की आँखें सजल हो उठीं।

इस संगोष्ठी में गायत्री परिवार के वरिष्ठ प्रतिनिधि श्री वी.के. खरे, अयोध्या जोन प्रभारी श्री देश बंधु तिवारी, सह प्रभारी श्री मनीराम वर्मा, वाराणसी जोन प्रभारी श्री मान सिंह, बहराइच उपजोन समन्वयक श्री राम सजीवन पाल, लखनऊ जिला समन्वयक श्री अतुल सिंह, सर्वश्री जगराम विश्वकर्मा, गंगासागर वर्मा, एस के गोयल, निधि वर्मा, आदित्य पांडेय, माया वर्मा, मीना देवी सहित प्रदेश के जनपदों से पहुँचे सैकड़ों प्रतिनिधि उपस्थित थे।

जिला स्तरीय युवा सम्मेलन

बस्ती। उत्तर प्रदेश : दिनांक 22 जनवरी को बस्ती में जिला स्तरीय युवा जागृति कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के मुख्य वक्ता शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह एवं प्रांतीय प्रतिनिधि श्री जयप्रकाश वर्मा थे। श्री आशीष सिंह ने प्रतिभागियों को श्रेष्ठ चिंतन और उत्कृष्ट जीवन के लिए युवा पीढ़ी को अपने गौरवपूर्ण इतिहास और संस्कृति से जुड़ने की प्रेरणा दी। श्री जय प्रकाश वर्मा ने सामर्थ्य विकास के सूत्रों की चर्चा की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीडीओ डॉ. राजेश प्रजापति व उनकी पत्नी डॉ. श्रेया थे। डॉ. श्रेया ने कहा कि जो जवानी समाज की बहिन-बेटियों की रक्षा न कर सके, ऐसी जवानी पर धिक्कार है।

शान्तिकुञ्ज से श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति-कुलपति डॉ. चिन्मय जी ने भी वीडियो संदेश देते हुए देश के कर्णधारों को उनकी सामर्थ्य एवं नैतिक जिम्मेदारियों का बोध कराया।

आयोजन मंडल के विशाल श्रीवास्तव, अनूप गौड़, राम सागर चौधरी, आकाश वर्मा, नितेश सिंह, ओम प्रकाश जगराम सहित बड़ी संख्या में युवाओं ने अपने उत्साहभरे पुरुषार्थ से इस सम्मेलन को सफल बनाया।

श्री आशीष सिंह सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी एवं दम्पति शिविर

गद्गद हो गईं कन्या कौशल शिविर में शामिल 700 छात्राएँ

उमंग-उत्साह से लबरेज शिविर में शामिल कन्याएँ

भवानी मंडी, झालावाड़। राजस्थान

दिनांक 14 एवं 15 जनवरी 2023 की तिथियों में भवानी मण्डी में कन्या कौशल दाम्पत्य शिविर और आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी शिविर के माध्यम से नारी उत्कर्ष के प्रशंसनीय प्रयास हुए।

प्रथम दिन आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान के लिए समर्पित रहा। इसका शुभारम्भ मुख्य वक्ता भीलवाड़ा से आए गायत्री परिवार के सदस्य डॉ. राधेश्याम श्रोत्रिय एवं गणमान्यों ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। स्थानीय नवजीवन हॉस्पिटल में कार्यरत स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. श्रीमती आरती पाटीदार ने गर्भ विज्ञान की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। खण्डवा से आई श्री बृजेश पटेल और उनकी देवकन्याओं की टोली ने गृहस्थ जीवन के अत्यंत महत्त्वपूर्ण सूत्रों से अवगत कराते हुए सभी को आश्चर्यचकित कर दिया।

शिविर में लगभग 120 दम्पति एवं गृहस्थों ने इसमें भाग लिया। सभी को गायत्री मंत्र का उपवस्त्र उढ़ाकर सम्मानित किया गया। पूरा शिविर स्थल गायत्रीमय हो गया। सभी ने देवस्थापना कराई।

अगले दिन आयोजित कन्या कौशल शिविर में नगर के सभी विद्यालयों से कन्याओं को आमंत्रित किया गया था। 700 से अधिक कन्याओं की उपस्थिति रही। सभी का गायत्री मंत्र का उपवस्त्र उढ़ाकर सम्मान किया गया। शिविर के मुख्य अतिथि नगर पालिका अध्यक्ष श्री कैलाश बोहरा थे। प्रश्नोत्तरी से युक्त अपनी तरह के इस विलक्षण शिविर में भाग लेने वाली कन्याओं ने इसके प्रति अपने मन के भाव व्यक्त किए। उन्होंने इसे ज्ञानवर्धक, जीवन की दिशा का प्रबोधक एवं भक्तिमय कार्यक्रम बताया। उन्होंने कहा कि ऐसे शिविर समय-समय पर आयोजित होते रहें तो कन्याओं के जीवन में व्याप्त अज्ञान और कुसंस्कार होंगे और जीवन की नई दिशा मिलेगी।

यह कार्यक्रम श्री बृजेश पटेल एवं उनकी टोली ने सम्पन्न कराया। श्री गोपाल लाल शर्मा उपजोन सह समन्वयक झालावाड़ ने कार्यक्रम के उद्देश्यों से अवगत कराया। इसका संचालन श्री प्रहलाद नागर व्याख्याता एवं जिला समन्वयक शिक्षा विभाग ने किया। मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी श्री शिव लाल पाटीदार ने आभार व्यक्त किया।

युवा उत्कर्ष-2023

उदयपुर जिले के 8 महाविद्यालयों में 'दिया' प्रकोष्ठ की स्थापना

उदयपुर। राजस्थान

'दिया' उदयपुर ने 22 जनवरी को युवा उत्कर्ष-2023 का आयोजन किया। इसमें 8 महाविद्यालयों के प्राचार्य और चयनित 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान देने के लिए सभी प्राचार्यों का अभिनन्दन किया गया। उनके विशेष सहयोग से इन आठ महाविद्यालय में 'दिया' प्रकोष्ठ की स्थापना की गई, जिसके माध्यम से उनके विद्यार्थियों को व्यक्तित्व निर्माण तथा मानव सेवा सम्बन्धी प्रेरणाएँ दी जाती रहेंगी।

कार्यक्रम बहुआयामी शिक्षाओं से ओतप्रोत था। डॉ.आदेश भटनागर ने स्वामी विवेकानंद और नेताजी सुभाषचंद्र बोस जैसे राष्ट्र निर्माताओं के जीवन पथ पर चलने की प्रेरणा दी। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि प्रो. विश्वप्रकाश त्रिपाठी ने युग निर्माण आन्दोलन की विशेषताएँ बताईं। देसंविवि से इंटर्नशिप पर आयी कन्याओं देवांशी, नंदिनी एवं दीक्षा ने योग को जीवन में उतारने का सन्देश दिया। श्री प्रणय त्रिपाठी ने 'दिया' एवं गायत्री परिवार की गतिविधियों से परिचय कराया। बाल संस्कार शाला के बच्चों तथा श्री नरेंद्र सिंह और श्री शिवसुत राव ने नशा, कुरीति और दुर्व्यसनों से दूर रहने की प्रेरणा दी। श्री ललित पानेरी और श्री रमेश असावा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सर्वश्री आलोक व्यास, ललित पानेरी, हेमन्त श्रीमाली, दिया के सक्रिय सदस्य रमेश असावा, नरेंद्र जी, डॉ. आदेश जी, विनोद जी, राजेन्द्र जी, सुनीता जी, मेघा जी, देवीलाल जी, शिवसुत जी, विवेक दवे, प्रणय त्रिपाठी, चयन त्रिपाठी, विशाल जोशी, आदित्य कुमार व संचालनकर्ता डॉ.अंजू श्रीमाली और हेमांग जोशी द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

राजस्थान के वागड़ क्षेत्र में कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण

घाटोल, बाँसवाड़ा। राजस्थान

नारी सशक्तीकरण वर्ष में एक प्रशंसनीय पहल करते हुए गायत्री शक्तिपीठ घाटोल में नौ दिवसीय कर्मकांड एवं ढपली प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। दिनांक 22 से 30 जनवरी की तिथियों में आयोजित इस आवासीय शिविर में 30 शिविरार्थियों ने भाग लिया। नौ दिनों तक प्रातः जागरण से लेकर रात्रि शयन तक शान्तिकुञ्ज जैसी आदर्श दिनचर्या अपनाई गई। प्रशिक्षण के साथ सभी शिविरार्थियों ने 24 हजार गायत्री महामंत्र जप का अनुष्ठान भी किया।

वागड़ क्षेत्र की पावन धरा में हुई इस प्रशंसनीय पहल का स्वागत करने शिविर के उद्घाटन एवं समापन समारोह में अनेक गणमान्य पधारे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता गायत्री परिवार के जिला समन्वयक श्री सुरेश चंद्र जोशी ने की। वैष्णव समाज के अध्यक्ष संजय बसेर, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री पूंजी लाल गायरी एवं श्री शत्रुघ्न सोनी शिविरार्थियों के उत्साहवर्धन के लिए पधारे।

पुष्कर राज से आई श्री जसवीर सिंह, श्री नरेश साहू एवं श्री सुरेश चंद्र की टोली ने प्रशिक्षण शिविर का संचालन किया। जिले में सक्रिय गायत्री परिवार के सभी वरिष्ठ-कनिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने पूरी तन्यमता और उमंग-उत्साह के साथ इस शिविर को सम्पन्न कराने में सहयोग किया।

उद्घाटन समारोह में उपस्थित टोली व गणमान्य

बुद्धिजीवियों को आकर्षित कर रही है गायत्री परिवार की संस्कार परम्परा

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश

पुलिस विभाग में संयुक्त निदेशक और पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज में सेवाएँ प्रदान कर रहे श्री राजेश शुक्ला ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सरिता शुक्ला के संग अपने विवाह की 25वीं वर्षगाँठ गायत्री परिवार के विधि-विधान के साथ मनाई। यह समारोह मानसरोवर पैराडाइज़ होटल में यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ।

गायत्री चेतना केन्द्र के परिव्राजक श्री घनश्याम त्रिपाठी एवं श्रीमती पूनम ने दाम्पत्य जीवन की मधुरता और सफलता के सूत्रों की व्याख्या की। गुरुदेव-माताजी की ओर से शुभाशीष देने चेतना केन्द्र व्यवस्थापक श्री एल.के. त्यागी, श्रीमती शीला त्यागी, श्री एस.एन. मिश्रा, डॉ. लवलेश, हरीश जी आदि उपस्थित रहे।

> जीवन में संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि धर्मतंत्र की नैतिक शिक्षाएँ कानूनी सुधार प्रक्रिया से कही अधिक प्रभावशाली होती हैं। - **श्री राजेश शुक्ला जी**

विवाह की 25वीं वर्षगाँठ मानते श्री शुक्ला दम्पति

गणतंत्र दिवस

विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित हुए श्री जितेन्द्र कुमार द्विवेदी

पासीघाट। अरुणाचल प्रदेश

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी के प्रति अनन्य आस्था रखने वाले श्री जितेन्द्र कुमार द्विवेदी, मुख्य अभियंता सीमा सड़क संगठन, परियोजना ब्रह्मांक को भारत सरकार द्वारा विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें विगत गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी ने प्रदान किया।

श्री जीतेन्द्र कुमार द्विवेदी ने अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र में विगत वर्ष में बेहतरीन कार्य का प्रदर्शन करते हुए कई परियोजनाओं को त्वरित गति से पूरा किया। इनमें से प्रमुख है सियोम स्टील आर्च ब्रिज। इस ब्रिज का राष्ट्र को समर्पण माननीय रक्षा मंत्री जी द्वारा हाल ही में 3 जनवरी को किया गया ' इन्होंने नॉर्थ ईस्ट मौसम के लिए खास नईं रोड कंस्ट्रक्शन तकनीक,Cut and Fit को भी विकसित किया एवं रोड कंस्ट्रक्शन की गति और गुणवत्ता बढ़ाने के किए कई अन्य नई तकनीकियों का उपयोग किया।

पूर्वोत्तर भारत में मिशन की विचारधारा के प्रचार और प्रसार में श्री जीतेन्द्र कुमार द्विवेदी का सराहनीय योगदान रहा है। शान्तिकुञ्ज से श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी एवं देसंविवि के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने उनकी इस सफलता पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्ति करते हुए उन्हें उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

भगवान से प्रार्थना कीजिए, याचना नहीं। मनुष्य इतना कमजोर और अक्षम नहीं है कि उसे किसी का मुँह ताकना पड़े और याचना के लिए हाथ फैलाना पड़े।

अमेरिका और कनाडा में मनाई गई वसंत पंचमी

हेमेट। संयुक्त राज्य अमेरिका

वसंत पंचमी की पावन वेला में संयुक्त राज्य अमेरिका में जगह-जगह यज्ञ एवं दीपयज्ञ के साथ विशिष्ट पूजन के कार्यक्रम आयोजित हुए। हेमेट में सेवाएँ प्रदान कर रहे शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जयराम मोटलानी एवं श्रीमती नीलम मोटलानी के द्वारा 22 जनवरी को 5 कुण्डीय यज्ञ के साथ बसंत पर्व मनाया गया। उल्लेखनीय है कि वे गायत्री चेतना केन्द्र, हेमेट में नियमित रूप से योग की कक्षा एवं रविवारीय दीपयज्ञ/यज्ञ की शृंखला चला रहे हैं।

बे एरिया में नवजागृति

शान्तिकुञ्ज के परिव्राजक दम्पति 27 जनवरी को बे एरिया में पहुँचे। वहाँ के परिजनों द्वारा वसंत पर्व के उपलक्ष्य में 28-29 जनवरी को 2 दिन का कार्यक्रम रखा गया था। 28 जनवरी को 24 कुंडीय यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें एक सीमंतोनयन संस्कार व एक जन्मदिन संस्कार भी मनाया गया। यज्ञ में लगभग 150 लोग सम्मिलित हुए। यज्ञ के बाद भोजन व कार्यकर्ता गोष्ठी संपन्न हुई, जिसमें केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने जन्मशताब्दी वर्ष और भावी सक्रियता से सम्बन्धित मार्गदर्शन दिया। फ्री मोंट में हिंदू टेम्पल के संस्थापक श्री ललित माथुर एवं लीला माथुर भी कार्यक्रम में विशेष रूप से सम्मिलित हुए।

29 जनवरी को बालसंस्कार शाला के बच्चों की वैदिक गणित तथा योग से स्वास्थ्य संरक्षण विषय पर कक्षा हुई। कई परिजन इस कार्यक्रम से ऑनलाइन भी जुड़े थे।

बे एरिया के उत्साही और श्रद्धावान कार्यकर्त्ताओं से मिलकर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने बहुत आनंद और संतोष का अनुभव किया। उनके साथ गुरुदेव-माताजी के संस्मरण व केन्द्र से मिशन की गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने व बढ़ाने आदि विषय पर सार्थक चर्चा हुई।

स्थानीय कार्यकर्त्ता श्री निमित ठाकर और शाश्वत कुमार ने यज्ञ संचालन टोली में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों का सहयोग किया। श्रीमती अंजू पटेल, सविता राणा, निमित ठाकर, नरेश गौतम, अतुल नेमा, प्रशान्त जारोलिया, दिनेश अग्रवाल, ध्यानेश व्यास, जवनिका झवेरी आदि परिजनों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया।

बे एरिया में मनाए वसंतोत्सव के अवसर पर दीप प्रज्वलन करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

मिसिसागा। कनाडा

अखिल विश्व गायत्री परिवार की टोरंटो शाखा ने वसंत पंचमी के उपलक्ष्य में 3 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया। गायत्री परिवार की आस्था के इस प्रमुख पर्व समारोह में लगभग 350 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव के जीवन में उनकी मार्गदर्शक दिव्य चेतना के अवतरण से लेकर मानवता के कल्याण के लिए उनके द्वारा किए गए प्रचण्ड तप की जानकारी श्रद्धालुओं को दी गई। टोरंटो में गायत्री परिवार द्वारा संचालित बाल संस्कारशाला के छात्र परम का उद्बोधन हृदय को छू लेने वाला था। उन्होंने गायत्री परिवार की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि अगर हम मानवता का उत्कर्ष चाहते हैं तो मानव मात्र में नई चेतना जगाने वाले इस अभियान को सशक्त बनाने में हम सबको भागीदारी करनी चाहिए।

वसंतोत्सव में जुलाई के दूसरे सप्ताह में आयोजित होने जा रहे 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ सहित आगामी कार्यक्रमों और योजनाओं की जानकारी दी गई।

29 जनवरी 2023 को गायत्री परिवार हेमिल्टन शाखा ने यज्ञ व अन्नप्राशन संस्कार का कार्यक्रम सम्पन्न कराया। कार्यक्रम में भाग ले रहे श्रद्धालुओं को परम पूज्य गुरुदेव के जीवन दर्शन और उत्कृष्ट व्यक्तित्व गढ़ने की टकसाल देव संस्कृति विश्वविद्यालय की जानकारी दी गई।

विद्यार्थियों को युग साहित्य का परिचय कराते पुस्तक मेले

गुरुग्राम। हरियाणा

मिलेनियम सिटी गुरुग्राम के सक्रिय कार्यकर्ता दंपति संजय सिन्हा एवम मनीषा सिन्हा के प्रयासों से जनवरी-फरवरी माह में गुरुग्राम के पाँच सीनियर सेकेंडरी विद्यालयों में युग साहित्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इनमें 10 हजार से ज्यादा बच्चों ने युग साहित्य का अवलोकन किया एवं खरीदा। यह युग साहित्य प्रदर्शनी (1) चकरपुर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, (2) कार्टरपुरी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, (3) राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सेक्टर 4/7, (4) राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सरहौल और (5) संस्कृति मॉडल गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सुशंतलोक में लगाई गई थी।

श्री संजय सिन्हा ने बताया कि उन्हें प्रत्येक विद्यालय में युग साहित्य के प्रति बहुत ही उत्साहवर्धक सकारात्मक दृष्टिकोण देखने को मिला। वे एक दिन पूर्व विद्यालय की प्रार्थना सभा में जाकर युग साहित्य की विशेषता बताते और शिक्षक व बच्चों

को इसके नियमित स्वाध्याय से जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित करते रहे।

विद्यालयों में संचालित युग निर्माण योजना से जुड़ी सभी गतिविधियों में गुरुग्राम की जिला शिक्षा अधिकारी कैप्टन इंदु बोकान का विशेष मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त है, जो अखंड ज्योति एवं युगऋषि के साहित्य का नियमित अध्ययन करती रही हैं। प्रज्ञा मंडल के साथी मनोज सहाय जी, ज्योति जी, तेजस्वी जी, शिव कुशवाहा जी, विवेक शर्मा जी, सुनीता जी आदि का विद्या विस्तार के हर कार्य में सक्रिय सहयोग रहा है।

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

''मुझे ढूँढ़ना है तो मेरे चित्र में नहीं, मेरे साहित्य में ढूँढ़ो।'' ''मैं व्यक्ति नहीं विचार हूँ।'' ''साहित्य समाज का दर्पण है।'' जैसे अनेक पोस्टर महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ में चल रहे पुस्तक मेले के आकर्षण का केन्द्र बने। इस पुस्तक मेले में बड़ी संख्या में विद्यापीठ के छात्र-छात्रा और शिक्षकगण आए। उन्होंने इन विचारों से प्रेरित होकर बड़ी रुचि के साथ युग साहित्य का अवलोकन किया और खरीदा।

यह पुस्तक मेला (बुक फेयर) काशी विद्यापीठ के अंग्रेजी विभाग की ओर से आयोजित था। विद्यापीठ के अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. निशा सिंह चाहती थीं कि उनके विद्यार्थी युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य से परिचित हों। उन्होंने गायत्री शक्तिपीठ,लंका के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी डॉ. रोहित गुप्ता से सम्पर्क कर पूज्य गुरुदेव के साहित्य की प्रदर्शनी लगवाई। विचार क्रान्ति अभियान के लिए प्रमुख रूप से समर्पित श्री नगीना यादव ने इस ज्ञानयज्ञ में अहम भूमिका निभाई।

काशी विद्यापीठ में पुस्तकें देखते विद्यार्थी

शिक्षण संस्थानों में वाङ्मय स्थापना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर ने अपने वाङ्मय स्थापना के भागीरथी प्रयासों के

महाराणा प्रताप स्कूल ऑफ फार्मेसी में स्थापना

अन्तर्गत महाराणा प्रताप स्कूल ऑफ फार्मेसी, गौरा, मोहनलालगंज लखनऊ के पुस्तकालय में तथा 'सिटी वूमन कॉलेज जानकीपुरम् विस्तार, लखनऊ' में पूज्य गुरुदेव के वाङ्मय के समस्त 79 खण्डों की स्थापना कराई। यह स्थापनाएँ क्रमशः सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री जितेन्द्र सिंह ने अपने सम्मानित पूर्वजों की स्मृति में तथा डॉ. नीलम गुप्ता ने अपने प्रिय जीवन साथी एवं पूज्य पिता स्व. प्रेम शंकर गुप्ता की स्मृति में कराई हैं।

ज्ञानयज्ञ योजना 'प्रयागराज 50,000'

चरित्रवान व्यक्तित्व गढ़ने और भटकों को दिशा देने का एक महान प्रयोग

संकल्पनिष्ठों के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

ज्ञानयज्ञ के लिए अपना सारा जीवन समर्पित कर देने के लिए व्रतशील प्रयागराज के प्राणवान परिजन श्री देवब्रत साहा राय सन् 2018 में शान्तिकुञ्ज आए थे। प्रज्ञा अभियान के माध्यम से जन-जन में परम पूज्य गुरुदेव एवं उनके मिशन के प्रति आस्था बढ़ाने की योजना उन्हें बहुत अच्छी लगी। उन्होंने पाक्षिक के 240 सदस्य बनाने का निर्णय लिया था, किन्तु गुरुस्मारकों पर उनके मुँह से अनायास ही 2400 सदस्य बनाने की बात निकल गई। उन्होंने इसे गुरुदेव-माताजी का आदेश माना और पूरा किया। श्री देवब्रत जी को यह योजना इतनी प्रभावशाली लगी कि क्रमशः संख्या बढ़ाते हुए वे इस वर्ष छः राज्यों में 50,000 नए लोगों तक निःशुल्क प्रज्ञा अभियान पहुँचा रहे हैं। उनका संकल्प है कि वे हर वर्ष सदस्य संख्या बढ़ाते रहेंगे और परम वंदनीया के जन्म शताब्दी वर्ष 2026 में ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज की ओर से **एक लाख लोगों को** निःशुल्क प्रज्ञा अभियान भेजेंगे।

एक लाख लोगों तक निःशुल्क पहुँचाएँगे प्रज्ञा अभियान

उद्देश्य : यह ज्ञानयज्ञ अच्छे व्यक्ति, चरित्रवान व्यक्ति गढ़ने तथा भूले-भटकों को दिशा देने के महान उद्देश्य से चलाई जा रही है। इन दिनों 6 राज्यों के 200 कारागार, 1450 विद्यालय, 100 ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित कार्यकर्त्ताओं के माध्यम से 50,000 पाक्षिक वितरित किए जा रहे हैं।

योजना : यह पूरी योजना ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित परिजनों के **उदारतापूर्वक किए जा रहे सहयोग से संचालित** है। पूरी योजना का कुल खर्च **40 लाख रुपये** (50,000 X ₹ 80/-) है। जो महानुभाव इस योजना में सहयोग कर रहे हैं, वे सीधे शान्तिकुञ्ज के खाते में अपनी सहयोग राशि जमा कराते और **शान्तिकुञ्ज से उसकी रसीद** प्राप्त करते हैं तथा उसकी सूचना शान्तिकुञ्ज के पंजीयन विभाग के साथ योजना के संयोजक श्री देवब्रत साहा राय को देते हैं, ताकि इस विशेष मद में जमा की गई धनराशि का हिसाब रखा जा सके।

सहयोग राशि दाताओं के नाम प्रकाशित किए जाते हैं।

इस योजना के अन्तर्गत कोई भी व्यक्ति स्वेच्छा से न्यूनतम 25 पाक्षिक का शुल्क ₹ 2000/- या यथासंभव अधिक का सहयोग कर सकता है। सहयोग करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का नाम निःशुल्क भेजी जा रही 50,000 प्रतियों में प्रकाशित किया जाता है।

परिजनों से अपेक्षा : प्रज्ञा अभियान एक ऐसा माध्यम है, जिस से श्रद्धालुओं को परम पूज्य गुरुदेव की आकांक्षा के अनुरूप उनके विचार और मिशन से आसानी से जोड़ा जा सकता है। यह उनसे बार-बार संपर्क का माध्यम बनता है। जो लोग यज्ञादि माध्यमों से पूज्य गुरुदेव की चेतना के विस्तार के लिए समर्पित हैं, ऐसे सक्षम महानुभाव इस योजना में भी उदारतापूर्वक सहयोग करेंगे, ऐसी अपेक्षा है, प्रार्थना है।

संपर्क सूत्र : योजना की विस्तृत जानकारी तथा धनराशि जमा करने के लिए बैंक खातों के नम्बर प्राप्त करने के लिए, प्रकाशित किए जा रहे विशेषांक का प्रारूप देखने आदि के लिए ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज के संयोजक से संपर्क कीजिए। संयोजक : **श्री देवब्रत साहा राय,** प्रयागराज

मोबाइल : 7007122798, **व्हॉट्सएप** : 9415638196

अमृत रत्न महोत्सव में गौरवशाली भागीदारी

अलीगढ़। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्त्ता बहिन मंगलेश यादव ने 15 वर्षों की कड़ी मेहनत के नवनीत स्वरूप पूरे साक्ष्य और प्रमाण के साथ सारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों से सम्बन्धित लेख प्रस्तुत किए। इससे संस्कृति मंत्रालय बहुत प्रभावित हुआ। मंत्रालय ने मंगलेश बहिन को अमृत रत्न महोत्सव में आमंत्रित किया।

27 जनवरी को मंगलेश यादव और होनहार युवक श्री अभिषेक यादव अमृत महोत्सव में उपस्थित हुए। अलीगढ़ के उपजोन समन्वयक श्री सुकवाशी वानप्रस्थी ने बताया

महोत्सव में अपनी प्रस्तुति देती सुश्री मंगलेश

कि बहिन मंगलेश ने परम पूज्य गुरुदेव की सन् 1936 से लेकर अब तक की और भावी योजनाओं को बड़ी कुशलता के साथ प्रस्तुत किया। इसने प्रबुद्ध वर्ग को बहुत प्रभावित किया, वे परम पूज्य गुरुदेव के पुरुषार्थ को श्रद्धापूर्वक नमन करते दिखाई दिए।

साहित्य विस्तार पटल और 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' के कार्यालय का शुभारम्भ

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ गोमती नगर पर वसंत पर्व आयोजन में लगभग 2000 परिजनों ने भाग लिया। प्रातः 9 बजे से 3 बजे तक अनवरत यज्ञ तथा विद्यारंभ, दीक्षा, गर्भोत्सव संस्कारों का क्रम चलता रहा। लोगों ने साहित्य प्रदर्शनी स्टॉल से बड़ी मात्रा में साहित्य खरीदा।

उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार द्वारा उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी श्री राजेंद्र पेंसिया सपरिवार उपस्थित थे। उन्होंने आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी के कार्यालय एवं साहित्य विस्तार पटल का उद्घाटन किया। जाने-माने वैज्ञानिक हैवी वॉटर प्रोजेक्ट भाभा एटॉमिक रिसर्च केंद्र मुंबई के भूतपूर्व चेयरमैन डॉ. अवधेश नारायण वर्मा ने सपत्नीक 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी, अयोध्या जोन-1 के कार्यालय में दीप प्रज्वलन किया।

नवचेतना जागरण यज्ञों से जनमानस पर छा रही है युग निर्माणी आस्था

वरिष्ठ सैन्य अधिकारी और केन्द्रीय मंत्री ने भी भाग लिया

विशाखापत्तनम। आंध्र प्रदेश

दिनांक 8 जनवरी 2023 को गायत्री परिवार द्वारा केंद्रीय विद्यालय मलकापुरम, विशाखापत्तनम में 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री आदरणीय श्री जीवीएल नरसिम्हा राव सहित कमोडोर श्रीकुमार, कमोडोर पूजा चौहार, कमोडोर झा, ले. कमाडोर नितिन भारद्वाज, ले. कमोडोर ओझा सहित नेवी के अनेक वरिष्ठ अधिकारियों ने बड़ी श्रद्धा के साथ इस महायज्ञ में भाग लिया। यज्ञ में कई वरिष्ठ जनप्रतिनिधि श्रीमती सुहासणी आनंद, श्री रवीन्द्र रेड्डी, श्री दिलीप वर्मा, श्री राजकुमार शर्मा, श्री अरुण कुमार आदि उपस्थित थे।

51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में भाग लेती जनमेदिनी और मंच पर माननीय श्री जीवीएल नरसिम्हा राव, वरिष्ठ सैन्य अधिकारी और शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

भारतीय नौसेना में सेवाएँ प्रदान करते हुए और सेवानिवृत्ति के बाद भी सैन्य अधिकारियों, सैनिकों तथा उनके परिवारी जनों में परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के प्रति निरन्तर आस्था जगाने वाले श्री इंद्रजीत सिंह ढाकरिया और उनके साथियों ने इस महायज्ञ का आयोजन किया था।

छः माह में 476 घरों में यज्ञ सम्पन्न कराए

गृहे-गृहे यज्ञ अभियान

रतलाम। मध्य प्रदेश

परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष-2026 को लक्ष्य कर रतलाम शाखा द्वारा जिले के गाँव-गाँव में जनजागरण का सशक्त अभियान चलाया जा रहा है। गृहे-गृहे यज्ञ अभियान के माध्यम से मिशन के प्रत्येक प्रचारात्मक एवं रचनात्मक कार्यक्रमों को शानदार गति मिल रही है।

गृहे-गृहे यज्ञ अभियान प्रभारी श्री अर्जुन सिंह चौहान ने बताया कि 10 जुलाई 2022 से प्रारम्भ इस अभियान के अन्तर्गत प्रत्येक रविवार को किसी न किसी गाँव अथवा नगर के किसी मोहल्ले में एक साथ एक ही समय पर अनेक घरों में यज्ञ कराए जाते हैं। विगत वर्ष रतलाम जिले के गाँवों में कुल 476 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुआ। यह सामूहिक यज्ञ अभियान ग्राम बावड़ी, जड़वासखुर्द, शेरपुर, बोदिना, करिया, नौगाँवजगीर, जड़वासा कलाँ, अडवानिया, बडायला माताजी, धामेड़ी, बांगरोद, शिवगड, पिपलौदी, जावरा, खेड़ा पिपलौदी में सम्पन्न हो चुका है। इन गाँवों में एक दिन में औसतन 18 से 30 घरों में यज्ञ हुए हैं। सर्वाधिक यज्ञ दिनांक 30 दिसम्बर को बांगरोद के 71 घरों में हुए। रतलाम शहर की दीपक नगर, सनसिटी कॉलोनी शहर रतलाम और तिरुपति नगर में भी सामूहिक यज्ञ अभियान का सफलतापूर्वक आयोजन हो चुका है।

श्री अर्जुन सिंह चौहान ने बताया कि जनजागरण का यह महान कार्य जिले के समस्त कार्यकर्त्ताओं की मिशन के प्रति अगाध निष्ठा और अथक पुरुषार्थ से ही संभव हो पा रही है। इसके माध्यम से देव स्थापना, युग साहित्य के प्रचार, वृक्षारोपण, व्यसनमुक्ति संकल्प, युवा जोड़ो, स्वास्थ्य संवर्द्धन, राष्ट्र जागरण जैसे अभियानों को उल्लेखनीय गति मिली है। श्री पातीराम शर्मा, श्रीमती लक्ष्मी शर्मा, श्री रामलाल पाटीदार, श्री लालाशंकर पाटीदार, श्री राजेश ऋषिरा, श्री भागीरथ धाकड़ आदि अनगिनत सहयोगी कार्यकर्त्ता इस अभियान की व्यवस्था और युग पुरोहितों के रूप में शानदार भूमिका निभा रहे हैं। अभियान प्रभारी ने सभी सहयोगियों को हृदय से धन्यवाद देते हुए उनकी संख्या, सक्रियता में निरंतर वृद्धि होने का विश्वास व्यक्त किया।

5 फरवरी को गृहे-गृहे यज्ञ अभियान से पूर्व गाँव में निकली जनजागरण यात्रा

साधकों के लिए समर्पित रहा 24 कुण्डीय यज्ञ

जैताला, नागपुर। महाराष्ट्र

30 जनवरी से 2 फरवरी 2023 तक जैताला में सम्पन्न 24 कुंडीय नव चेतना जागरण गायत्री महायज्ञ गायत्री के नैष्ठिक साधकों का यज्ञ कहा जा सकता है। इसमें नौ दिवसीय साधना अनुष्ठान करने वाले साधकों को प्रमुखता दी गई। इस यज्ञ में केवल पलाश की लकड़ी तथा गोमय समिधा का ही उपयोग किया गया।

कार्यक्रम सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री योगीराज बल्कि की टोली पहुँची थी। उन्होंने यज्ञ कर्मकाण्ड की वैज्ञानिकता समझाते हुए बुद्धिजीवियों को विशेष रूप से आकर्षित किया। संपूर्ण आयोजन की व्यवस्था महिला मंडल की कर्मठ प्राणवान संकल्पनिष्ठ बहिनों द्वारा ही की गई थी।

जैताला में यज्ञ संचालन करती शान्तिकुञ्ज की टोली

भरतपुर व अलवर जिले में प्रज्ञा पुराण कथा व यज्ञ शृंखला

भरतपुर। राजस्थान

इन दिनों क्षेत्र के लोकप्रिय एवं प्राणवान प्रज्ञा पुराण कथा वाचक श्री श्याम सुंदर शर्मा, श्री बहादुर सिंह सोलंकी और श्री प्रेम सिंह प्रजापति की टोली ने अलवर एवं भरतपुर जिलों में नौ कुण्डीय यज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथाओं की शृंखला चला रखी है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामवासियों को कुविचारों को त्याग कर सद्विचार अपनाने और जीवन में सदाचरण बढ़ाते हुए जीवन के उत्थान के लिए बहुमूल्य सूत्र दिए जा रहे हैं। नारी सशक्तीकरण के लिए परम्पराओं की लीक पर चलने की बजाय नई सोच के साथ उपयोगी परम्पराओं को अपनाने की प्रेरणा दी जा रही है।

हर कार्यक्रम में सद्ग्रंथ स्थापना व प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का अभियान

दिनांक 1 से 5 फरवरी की तिथियों में गंज खेड़ली में प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन किया गया। इसकी पूर्णाहुति नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुई। इस अवसर पर 21 भाई-बहिनों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली, कई अन्य संस्कार भी हुए। कार्यक्रम में आसपास के गाँवों से आए श्रद्धालुओं के अलावा कार्यक्रम को प्रेरणादायी बनाने में सहयोग करने अलवर, भरतपुर, नदबई, कठूमर, हलैना के अनेक कार्यकर्त्ता भी पहुँचे थे।

इससे पूर्व दिनांक 25 से 30 दिसम्बर 2022 की तिथियों में भरतपुर जिले के एक शहर नगर स्थित गायत्री शिक्षा निकेतन में प्रज्ञा पुराण कथा का अत्यंत प्रभावशाली आयोजन सम्पन्न हुआ। आयोजन की पूर्णाहुति नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुई। इस अवसर पर 32 गुरु दीक्षा, 6 पुंसवन सहित कुछ अन्य संस्कार हुए और 11 परिवारों में सद्ग्रंथों की स्थापना की गई।

वार्षिकोत्सव में बच्चों की शिक्षाप्रद प्रतियोगिताएँ

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ देवास का वार्षिकोत्सव कई रचनात्मक प्रतिस्पर्धाओं तथा देशभक्तिपरक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुआ। श्री केशव पटेल ने बताया कि गायन, निबंध, चित्रकला एवं प्रश्नोत्तरी जैसी प्रतियोगिताओं से छात्र-छात्राओं में अपनी संस्कृति के प्रति लगाव एवं देशभक्ति की उमंग जगाने के प्रयास हुए। नाटक और समूह नृत्य ने लोगों के मन जीत लिये। इनके द्वारा दहेज प्रथा, नारी जागरण अभियान, बिकाऊ दूल्हा, बेटी बचाओ, शिक्षा एवं नशामुक्ति जैसे विषयों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया गया था। कार्यक्रम के अंत में सभी विजेता बच्चों को प्रमाण पत्र व शील्ड देकर सम्मानित किया गया।

गायत्री शक्तिपीठ के वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि बैंक नोट प्रेस के संयुक्त महाप्रबंधक श्री प्रशांत महाजन थे। इंदौर उपजोन प्रभारी जेपी यादव, कोमल मिश्रा, प्रज्ञापीठ संरक्षिका दुर्गा दीदी एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय की परिवीक्षाधीन छात्राएँ गार्गी तिवारी, खुशी कुमारी एवं पूनम चौरसिया भी उपस्थित रहीं। आयोजन की सफलता में लक्ष्मण पटेल, शुभम निहाले, अभिषेक कुशवाह, मंजू पटेल, रामनिवास कुशवाह, चन्द्रिका शर्मा, सालिगराम सकलेचा, रमेश नागर, हिमांशु शर्मा, देवीशंकर तिवारी आदि ने सराहनीय योगदान किया। श्री प्रमोद निहाले ने आभार प्रदर्शन किया।

प्रज्ञा पुराण कथा से जागी आस्था

प्रवासी भारतीय द्वारा पैत्रिक गाँव में प्राण प्रतिष्ठा

गलोड़, हमीरपुर। हिमाचल प्रदेश

देव भूमि हिमाचल प्रदेश में तहसील गलोड़ स्थित गाँव बन्डौस में दिनाँक 2 से 5 जनवरी की तिथियों में 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का अत्यंत लोकप्रिय आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम सम्पन्न करा रही टोली द्वारा जीवन साधना के मर्म को द्वारा पहाड़ी भाषा में समझाये जाने से यह विशेष प्रभावकारी सिद्ध हुआ, जिसके कारण दिन पर दिन श्रोताओं की संख्या बढ़ती ही गई।

इस कार्यक्रम को गायत्री शक्ति पीठ, मोहाली, पंजाब से आई श्री प्रकाश शर्मा, श्रीराम लखनपाल, गगन मिश्रा व विनीत शर्मा की टोली ने सम्पन्न कराया। पूरे कार्यक्रम में स्थानीय स्तर पर मैहरे निवासी श्री राकेश शर्मा एवं पस्यार-हड़ेटा निवासी श्री मस्त राम जी ने महती भूमिका निभाई।

बन्सोड़ ऑस्ट्रेलिया में रह रहे श्री चूनी लाल शर्मा का पैतृक गाँव है। उन्होंने ही इस पूरे कार्यक्रम का आयोजन किया था। पूर्णाहुति के दिन उन्होंने भण्डारे में विशेष तौर पर पहाड़ी धाम का प्रबन्ध किया था, जिसका लाभ आस पास के गाँवों से आए सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने लिया।

बन्डोस गाँव के मंदिर में गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा

श्री चूनी लाल शर्मा ने कार्यक्रम के दरम्यान उभरे विशेष संकल्प को चरितार्थ करते हुए दिनांक 15 जनवरी को गाँव के मंदिर में पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा भी कराई। इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराने भी मोहाली से श्री प्रकाश शर्मा की टोली ही आई थी।

दिवंगत देवात्मा को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

हुगली। प. बंगाल : हुगली जिले के श्रीरामपुर गायत्री महिला मण्डल की सक्रिय कार्यकर्त्ता यमुना आपट का 23 जनवरी को देहावसान हो गया। मिशन के प्रति समर्पण ऐसा कि अस्वस्थ होते हुए भी वे 21 से 23 जनवरी 2023 की तारीखों में हो रहे 11 कुण्डीय यज्ञ के लिए आमंत्रण देने घर-घर गयीं। आराम करने की सलाह दी तो उन्होंने कहा, ''यह हमारा अंतिम समयदान है, हमें भी गुरु कार्य करने दें, कल तो उन्हीं के घर हमें जाना है।''

नारी सशक्तीकरण के लिए समर्पित रहा कार्यक्रम

इस्लाम नगर, सहारनपुर। उत्तर प्रदेश

28 व 29 जनवरी को इस्लाम नगर में सम्पन्न नव कुण्डीय गायत्री महायज्ञ नारी सशक्तीकरण के लिए विशेष रूप से समर्पित रहा। इसमें बहिन किरण ने महिलाओं को अपनी उत्कृष्ट सनातन परम्परा के अनुरूप प्रगतिशील विचारों के साथ जीवन को श्रेष्ठ और संस्कारित बनाने का संदेश दिया। इस्लाम नगर में महिला मंडल एवं युवा मंडल की स्थापना भी की गई। इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री परमेश्वर साहू की टोली पहुँची थी।

मंदिर प्रांगण में लीची का पौधा रोपकर पर्यावरण संरक्षण का एवं साहित्य स्टॉल लगा कर स्वाध्याय और मंत्र लेखन के लिए लोगों को प्रेरित किया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति के समय अनेक व्यक्तियों ने देव दक्षिणा स्वरूप व्यसन छोड़ने के संकल्प लिए।

यदि तुम्हारा तिरस्कार होता है तो उसे चुपचाप या हँसकर टाल दो। विवेक को (बदला लेने की) अपनी भावना के ऊपर रखो और सावधान रहो तो तुम्हारी रक्षा बड़े अच्छे ढंग से होगी। -न्यूटन

छत्तीसगढ़ में युग चेतना विस्तार हेतु सम्पन्न हुए विशाल यज्ञीय आयोजन

मानव जीवन का उद्देश्य भटकों को राह दिखाना तथा गिरे हुओं को ऊपर उठाना है-डॉ. चिन्मय पण्डया जी

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी नगरी के विशाल मंच से युग संदेश देते हुए

छत्तीसगढ का हरिद्वार है नगरी सिहावा क्षेत्र

• डॉ. चिन्मय पण्डया जी

नगरी, धमतरी। छत्तीसगढ़

सप्त ऋषियों की पावन तपस्थली हरिद्वार है और छत्तीसगढ का हरिद्वार है माँ चित्रोत्पला महानदी का उदगम स्थल नगरी सिहावा क्षेत्र, जहाँ सप्त ऋषियों ने साधना की है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उपरोक्त भावों के साथ स्थानीय लोगों को क्षेत्र की गरिमा और उनके जीवन के सौभाग्य का स्मरण कराया। वे नगरी में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के अन्तर्गत विराट दीप महायज्ञ में उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित कर रहे थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि परमात्मा ने हमें जिस महान उद्देश्य के लिए मानव जीवन दिया है, वह है भटकों को राह दिखाना, गिरे हुओं को उठाना। हम सबमें वह सामर्थ्य है, लेकिन सांसारिक व्यामोह में हम ऐसे भूल गये हैं कि परमात्मा के दिए सुरदुर्लभ अनुदान को पहचान ही नहीं पा रहे। उन्होंने कहा कि युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव की युग निर्माण योजना मानव के सोये देवत्व को जगाने और अपने जीवन के उद्देश्य की याद दिलाने की है। आप जब यहाँ से लौटें तो महामानवों जैसा जीवन का विराट उद्देश्य लेकर लौटें ताकि मनुष्य जीवन पाना सार्थक हो जाए।

दीपयज्ञ के पावन अवसर पर विद्यायक श्रीमती लक्ष्मी जी एवं गायत्री परिवार की प्रांतीय समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा भी उपस्थित थीं।

19 से 23 जनवरी की तिथियों में नगरी शहर में यह 108 कुंडीय महायज्ञ विभिन्न संस्कारों के साथ सम्पन्न हुआ। इसका शुभारम्भ गायत्री शक्तिपीठ से निकली भव्य कलश एवं सद्ग्रंथ शोभा यात्रा के साथ हुआ। महायज्ञ का संचालन शान्तिकुञ्ज से आई श्री परमानंद द्विवेदी की टोली ने किया। कार्यक्रम में श्री रमेश सार्वा, श्री समरथ जी, श्री चित्रभानु आदि अनेक कार्यकर्त्ताओं की अविस्मरणीय भूमिका रही।

तीनों दिन निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन हुआ।

भा.सं. ज्ञान परीक्षा के विद्यार्थियों का सम्मान

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्डया जी ने मंच पर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2022 की प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त करने वाले नगरी ब्लॉक के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएँ दीं तथा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि गतवर्ष धमतरी जिले के 14603 विद्यार्थियों ने परीक्षा में भाग लिया था।

तपस्वियों-युग साधकों की भूमि रानीगाँव में श्रद्धा का सिंचन

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी नगरी के महायज्ञ में आने से पूर्व प्रज्ञापीठ गोहरापदर के दर्शन करते हुए रानीगाँव, सिरसिदा, सिहावा, धमतरी के विभिन्न प्रज्ञा संस्थानों में पहुँचे। वहाँ उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को युग निर्माण आन्दोलन में शबरी जैसी ऐतिहासिक, अविस्मरणीय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। रानीगाँव पहुँचे डॉ. चिन्मय जी का स्थानीय परिजनों ने पलक पाँवड़े बिछाकर स्वागत किया।

रानीगाँव ऋंगी ऋषि की तपःस्थली है। यह शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री घनश्याम देवांगन की और सिरसिदा श्री पुनीत गुरुवंश तथा श्रीमती फूलेश्वरी किरण की मातृभूमि है। श्री घनश्याम देवांगन इन दिनों जन्मभूमि आँवलखेड़ा की व्यवस्था सँभाल रहे हैं, जबकि शान्तिकुञ्ज में विद्युत विभाग प्रभारी श्री पुनीत गुरुवंश ने युग साहित्य का छत्तीसगढ़ी भाषा में अनुवाद करने का बहुत बड़ा पुरुषार्थ किया है। नगरी के 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं मंचासीन गणमान्यों ने उनकी लिखी 32 पुस्तकों का विमोचन किया।

प्रज्ञापीठ गोहरापदर के दर्शन

श्री पुनीत गुरुवंश की 32 पुस्तकों का विमोचन

जिले की प्रतिष्ठित गौशाला में गायत्री मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा

सिलिडीह, धमतरी। छत्तीसगढ़

सिलिडीह में गायत्री परिवार द्वारा संचालित गौशाला में 24 कुंडीय महायज्ञ के साथ गायत्री माता मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न हुआ। गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा छत्तीसगढ़ प्रवास पर पहुँचे आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या द्वारा की गई। इस अवसर पर उन्होंने मृत्युंजय महादेव मंदिर का लोकार्पण तथ यज्ञशाला एवं श्रीराम स्मृति उपवन के लिए भूमिपूजन भी किया। कार्यक्रम में धमतरी जिले के सभी सक्रिय परिजनों की सहभागिता रही। (.... शेष पृष्ठ 8 पर)

सिलिडीह में यज्ञशाला के लिए भूमिपूजन करते हुए

छत्तीसगढ़ के विधान सभा अध्यक्ष एवं कांकेर के सांसद से मुलाकात

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी क्रमशः विधान सभा अध्यक्ष माननीय श्री चरणदास महंत, सांसद श्री मोहन मांडवी तथा वरिष्ठ जनप्रतिनिधि श्री शिव प्रकाश जी से हुए भेंटवार्ता के समय उन्हें युग साहित्य प्रदान करते हुए

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने दिनांक 6 फरवरी को रायपुर में छत्तीसगढ़ विधान सभा के अध्यक्ष माननीय श्री चरण दास महंत तथा कांकेर से सांसद माननीय श्री मोहन मांडवी से मुलाकात की। दोनों महानुभावों को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया। उन्हें गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे सामाजिक उत्कर्ष के कार्यों से अवगत कराया तथा शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय आने का निमंत्रण भी दिया।

विधान सभा अध्यक्ष माननीय श्री चरण दास महंत गायत्री परिवार के कार्यों से कई वर्षों से भलीभाँति परिचित हैं और उनके प्रशंसक भी रहे हैं। उन्होंने गायत्री परिवार के साधनात्मक, रचनात्मक एवं सेवाकार्यों को व्यक्तित्व के परिष्कार का सशक्त आधार बताया।

अपने छत्तीसगढ़ प्रवास पर देसंविवि. के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने रायपुर में वरिष्ठ जनप्रतिनिधि श्री शिव प्रकाश जी से मुलाकात की। उन्हें गुरुदेव का साहित्य भेंट करते हुए अपने सांस्कृतिक चेतना के नवोन्मेष के लिए किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी।

108 कुंडीय नवचेतना जागरण गायत्री महायज्ञ, महासमुंद

प्रत्येक मनुष्य में विद्यमान हैं दिव्य संभावनाएँ

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी महासमुंद में दीपयज्ञ के अवसर पर श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए

महासमुंद। छत्तीसगढ़

प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा का एक दिव्य संदेश लेकर जन्म लेता है। आवश्यकता है उस दिव्य संदेश को अनुभव करने और अपने देवत्व को जगाने की। बुद्ध का संदेश 'अप्प दीपो भव' और बालक नारायण के समर्थ रामदास बनने जैसे अनेक मार्मिक दृष्टांतों के साथ उन्होंने कहा कि मनुष्य चाहे तो अपने भीतर विद्यमान उत्कृष्ट संभावनाओं को साकार कर स्वामी विवेकानन्द, समर्थ रामदास की तरह महापुरुष बन सकता है और चाहे तो जीवन भर छोटी-छोटी समस्याओं में ही घिरे रहकर सुर दुर्लभ जीवन को बर्बाद कर सकता है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने महासमुंद में आयोजित विशाल 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में दीपयज्ञ के अवसर पर उपस्थिति श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए उपरोक्त संदेश दिया। उन्होंने कहा कि छोटी-छोटी समस्याएँ हमारे पैरों की बेड़ियाँ बन जाती हैं और मन के उत्साह को समाप्त कर देती हैं, हमें इस दयनीय स्थिति से निकलना होगा।

यह108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ महासमुंद के पिटियाझर स्थित कृषि उपज मंडी में सम्पन्न हुआ। तीन जिलों से आए अपार श्रद्धालुओं ने इस यज्ञ में भाग लिया। प्रतिदिन दोपहर दो बजे तक यज्ञ की पारियाँ चलती रहीं।

कार्यक्रम को शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री जितेन्द्र मिश्रा की टोली ने सम्पन्न कराया। शान्तिकुञ्ज से छत्तीसगढ़ जोन समन्वयक श्री शुकदेव निर्मलकर, रामावतार पाटीदार, पंकज चंदेल, पुष्कर राज सहित प्रांतीय जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा, श्रीमती सरला कोसरिया उपस्थित रहे। सर्वश्री ललित कुमार मेश्राम, प्रभात उपाध्याय, मनहरण साहू, बोधराम साहू, रिखी राम, श्याम जी, नायक जी, भरत जी, मुकेश जी, कैलाश जी, ,गुप्ता जी, नेतराम साहू, कन्हैया पटेल, आर पी साहू आदि ने कार्यक्रम आयोजन में विशेष योगदान दिया ।

सौभाग्य : एकमात्र महासमुंद वह पावन भूमि है जिसे सन् 70 के दशक में परम पूज्य गुरुदेव ने दो बार सहस्र कुण्डीय यज्ञ आयोजन का सौभाग्य प्रदान किया था।

संकल्प : महासमुंद के कार्यकर्त्ताओं ने यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर पूरे जिले में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान को पहुचाने का संकल्प लिया।

संस्कार : दीक्षा, नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन संस्कार और तीन जोडे आदर्श विवाह संपन्न हुए।

आकर्षण : यज्ञ स्थल पर सैण्ड आर्टिस्ट द्वारा निर्मित भगवान महाकाल की भव्य मूर्ति सबको आकर्षित करती रही। दीपयज्ञ की छटा निराली थी। मुख्य मंच के अलावा आकर्षक झाँकियों व गुरुसत्ता के प्रतीक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' दीप मालाओं से सजाया गया था।

गणमान्यों की भागीदारी : इस महायज्ञ में पूर्व सांसद चंदूलाल साहू, संसदीय सचिव विनोद सेवनलाल चंद्राकर आदि अनेक गणमान्यों ने भाग लिया।

सक्ती और बरपेलहाडीह में स्नेह सिंचन

बैसपाली (रायगढ़) से महासमुन्द की यात्रा में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गायत्री शक्ति पीठ सक्ती पहुँचे। वहाँ कार्यकर्त्ताओं से नवनिर्मित जिले में मिशन के विस्तार की संभावनाओं पर चर्चा की। शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री पुस्कर राज के छोटे से गाँव बरपेलहाडीह पहुँचकर पुष्कर जी के परिवारी जनों और लगभग 200 ग्राम वासियों से भेंट कर उनका उत्साहवर्धन किया। महासमुंद पहुँचने से पूर्व लम्बी यात्रा कर बेमचा प्रज्ञापीठ पहुँचे, दर्शन और आरती की।

महासमुंद से रायपुर लौटते हुए परम पूज्य गुरुदेव के निकटस्थ रहे स्व. ज्वाला प्रसाद शर्मा जी के घर जाकर उनके परिजनों से सौजन्य भेंट की। वहां परम पूज्य गुरुदेव के साधनाकाल के दुर्लभ चित्र के दर्शन किए।

संसार आज इसीलिए खड़ा है कि यहाँ घृणा से प्रेम की मात्रा अधिक है, असत्य से सत्य अधिक है। - महात्मा गाँधी

महाशिवरात्रि पर भक्तिभाव में डूबे महाकाल के अग्रदूत

रुद्राभिषेक करते श्रद्धेया शैल जीजी, श्रद्धेय डॉक्टर साहब, आदरणीया शेफाली जी, आहुति, स्तुति और शान्तिकुञ्ज, देसंविवि के निवासी

महाकाल के घौंसले के रूप में प्रतिष्ठित गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिसर में महाशिवरात्रि पर्व पूरे भक्तिभाव के साथ मनाया गया। रुद्राभिषेक का मुख्य कार्यक्रम देव संस्कृति विश्वविद्यालय में स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण में सम्पन्न हुआ। श्रद्धेया शैल जीजी, श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, आदरणीया शेफाली जी एवं कई गणमान्यों ने बड़ी तन्मयता और भक्तिभाव के साथ शिव की इस विशिष्ट आराधना में भाग लिया। इस अवसर पर प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर परिसर में उपस्थित हजारों शान्तिकुञ्ज वासी, शिविरार्थी गायत्री साधक एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के शिक्षक-विद्यार्थी भगवान महाकाल और अपने इष्ट-आराध्य परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी का ध्यान करते

शिव की भक्ति अपनी शक्ति-सामर्थ्य को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करने की प्रार्थना है।
- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

हुए उनकी सूक्ष्म चेतना को अपने अंतःकरण में धारण करते दिखाई दिये।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी ने अपने पर्व संदेश में कहा कि महाशिवरात्रि भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह शिव और शक्ति के मिलन का पर्व है। शक्ति के साथ जब शिवत्व का संयोग होता है, तभी वह कल्याणकारी सिद्ध होती है अन्यथा वह अनर्थ करती दिखाई देती है। उन्होंने कहा कि शिव की भक्ति अपनी शक्ति-सामर्थ्य को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करने की प्रार्थना है।

यह कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज के उद्गाताओं बंधुओं द्वारा प्रस्तुत गीत-संगीत और संकीर्तन से युक्त व भक्तिभाव से ओतप्रोत था। युग पुरोहित श्री श्याम बिहारी दुबे एवं श्री उदय किशोर मिश्रा ने सरस भावनाओं से सम्पन्न वैदिक मंत्रों के साथ इसे सम्पन्न कराया। रुद्राभिषेक समारोह में कुलपति श्री शरद पारधी, पूर्व व्यवस्थापक श्री शिवप्रसाद मिश्रा सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

शान्तिकुञ्ज के महाकाल मंदिर परिसर में, सप्तऋषि क्षेत्र में और देसंविवि स्थित सिद्धेश्वर महादेव मंदिर परिसर में सैकड़ों श्रद्धालुओं द्वारा व्यक्तिगत रूप से अभिषेक किया गया। सायंकालीन सत्संग सभा में भी अंतस् के शिवत्व को जगाने और महाकाल के साथ साझेदारी करने की प्रेरणा दी गई।

जिले की प्रतिष्ठित गौशाला में ....

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी सिलिडीह में गौशाला का निरीक्षण और परिजनों का उत्साहवर्धन करते हुए

..... पृष्ठ 7 आगे

सिलिडीह की यह गौशाला पूरे जिले का एक बड़ा रचनात्मक केन्द्र है। यहाँ बूचड़खाने जाने से बचाकर लाई गईं लगभग 250 गायें संरक्षित हैं। यहाँ बहुत बड़ा स्वावलम्बन प्रकल्प भी चल रहा है। स्वावलम्बन प्रकल्प के विस्तार के लिए आवश्यक प्रशिक्षण की योजना भी बनाई गई है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के छत्तीसगढ़ प्रवास में छत्तीसगढ़ के जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री सुखदेव निर्मलकर, श्री रामावतार पाटीदार, श्री पुष्कर राज और छत्तीसगढ जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा, युवा प्रकोष्ठ समन्वयक श्री ओम प्रकाश राठौर उनके साथ रहे।

देसंविवि की लगातार आठवें वर्ष
राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस परेड में भागीदारी

केन्द्रीय खेल मंत्री श्री अनुराग ठाकुर के साथ आलोक पाण्डेय

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े छात्र चि. आलोक पाण्डेय ने कर्त्तव्य पथ, दिल्ली में 26 जनवरी को आयोजित राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेते हुए अपने विश्वविद्यालय और पूरे उत्तराखण्ड का गौरव बढ़ाया। उल्लेखनीय है कि उत्तराखण्ड प्रांत से एकमात्र विद्यार्थी चि. आलोक का ही इस परेड के लिए चयन हुआ था।

देव संस्कृति विवि. ने लगातार आठवें वर्ष गणतंत्र दिवस की राष्ट्रीय परेड में भागीदारी की। चि. आलोक परेड से पूर्व दैनिक अभ्यास के लिए 1 से 25 जनवरी तक दिल्ली में ही रहा। परेड के अभ्यास के साथ सायंकाल होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भागीदारी की।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने इस सौभाग्य की सराहना करते हुए चि. आलोक और पूरे विश्वविद्यालय स्टाफ को बधाई दी, उत्साहवर्धन किया। माननीय प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि कड़े अनुशासन और धैर्य की परीक्षाओं से गुजर कर ही बड़ी उपलब्धियाँ अर्जित की जा सकती हैं।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने फार्मा एवं लैब एक्सपो का उद्घाटन किया

हरिद्वार। उत्तराखण्ड

सिडकुल मैनुफैक्चर्स एसोसिएशन उत्तराखंड एवं एमटेक इंडिया के सौजन्य से दिनांक 2 से 4 फरवरी तक फार्मा एवं लैब एक्सपो का आयोजन किया गया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या को इसके उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उद्घाटन समारोह में गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति श्री सोमनाथ जी, सिडकुल मैनुफैक्चर्स एसोसिएशन उत्तराखंड के अध्यक्ष डॉ. हरेंद्र गर्ग जी, एसोसिएशन ऑफ फार्मास्यूटिकल के अध्यक्ष डॉ. अनिल शर्मा सहित कई गणमान्य उपस्थित रहे।

शान्तिकुञ्ज : उद्देश्य और परिजनों से अपेक्षा

कायाकल्प के लिए बनी एक अकादमी

परम पूज्य गुरुदेव का अनुरोध

मित्रो! शान्तिकुञ्ज धर्मशाला नहीं है। यह कॉलेज है, विश्वविद्यालय है। कायाकल्प के लिए बनी एक अकादमी है। हमारे सतयुगी सपनों का महल है। आपमें से जिन्हें आदमी बनना हो, इस विद्यालय की संजीवनी विद्या सीखने के लिए आमंत्रण है।

हमने बुलाया केवल उन्हीं को है, जो समर्थ हों, शरीर या मन से बूढ़े न हो गए हों, जिनमें क्षमता हो, जो पढ़े-लिखे हों। इस तरह के लोग आयेंगे तो ठीक है, अगर आप अपनी नानी को, दादी को, मौसी को, पड़ोसन को लेकर के यहाँ कबाडखाना इकट्ठा कर देंगे तो यह विश्वविद्यालय नहीं रहेगा? फिर तो यह धर्मशाला हो जाएगी, साक्षात् नरक हो जाएगा। इसे नरक मत बनाइए आप। आप सबमें जो विचारशील हों, भावनाशील हों, हमारे इस कार्यक्रम का लाभ उठाएँ। अपने को धन्य बनाएँ और हमको भी। (वाङ्मय-क्र-68, पेज-1.41)

आवास व्यवस्था के संदर्भ में

शान्तिकुञ्ज एक जाग्रत् तीर्थ है, आत्मचेतना के जागरण और वैचारिक परिष्कार का अद्वितीय केन्द्र है। यह कोई धर्मशाला या पर्यटन स्थल नहीं है। यहाँ शिक्षण, संस्कार, आवास, भोजन जैसी सभी व्यवस्थाएँ निःशुल्क हैं, लेकिन आवासीय व्यवस्था केवल विशिष्ट उद्देश्यों के लिए आने वालों के लिए हैं।

महत्वपूर्ण सूचना
शिविर में केवल पूर्व स्वीकृति प्राप्त साधक ही भाग ले सकते हैं

- **साधना एवं प्रशिक्षण**

यहाँ नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र (प्रत्येक माह की 1 से 9, 11 से 19 तथा 21 से 29 की तिथियों में), एक मासीय लोकसेवी प्रशिक्षण सत्र (प्रत्येक माह की 1 से 29 की तिथियों में) तथा समय-समय पर कई अन्य सत्र चलते हैं। इनमें पूर्व स्वीकृति प्राप्त परिजन ही भाग ले सकते हैं। इन सबकी जानकारी ऑनलाइन ली जा सकती है, शिविरों में भागीदारी के लिए आवेदन की सुविधा ऑनलाइन उपलब्ध है। सम्पर्क कीजिए : www.awgp.org\shivir फोन : 9258360655

- **संस्कार** : शान्तिकुञ्ज में यज्ञोपवीत, मुण्डन, विवाह, पुंसवन अन्नप्राशन, नामकरण, विद्यारंभ, दीक्षा, श्राद्ध-तर्पण, जन्मदिन, विवाह दिन आदि संस्कार निःशुल्क कराए जाते हैं। संस्कार कराने आने वाले परिजनों को एक दिन ठहरने की व्यवस्था की जाती है।

- **तीर्थ सेवन** : पूर्व सूचना देकर एवं अनुमति प्राप्त कर तीर्थ सेवन के लिए शान्तिकुञ्ज में कभी भी आया जा सकता है। इसके लिए अधिकतम तीन दिन ठहरने की सुविधा है।

ध्यानाकर्षण : शान्तिकुञ्ज में आवासीय व्यवस्था साधकोचित है। अधिकांश लोगों को सामूहिक रूप से ठहरना होता है। पूर्व में कमरा आरक्षण जैसी कोई व्यवस्था नहीं है। अपने आवास की स्वच्छता का स्वयं ध्यान रखना होता है। संस्कार या तीर्थ सेवन के लिए आने वाले परिजनों को जो सुविधा एवं आवासीय व्यवस्था उपलब्ध होती है, वही आवंटित की जाती है।

कृपया सहयोग करें, यह भूल बिलकुल न करें

अखिल विश्व गायत्री परिवार हर दिन मत्यावतार की तरह विस्तार ले रहा है। शान्तिकुञ्ज के प्रति करोड़ों लोगों की आस्था है। ऐसे में यहाँ आने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक होती है। सबके लिए मनचाही व्यवस्थाएँ कर पाना किसी भी प्रकार संभव नहीं है।

बहुत-से लोग बिना किसी सूचना के विशिष्ट गणमान्यों को शान्तिकुञ्ज भेज देते हैं या साथ लेकर आते हैं। ऐसी स्थिति में मनचाही व्यवस्था न होने पर स्वयं तो निराश होते ही हैं, शान्तिकुञ्ज और मिशन की गरिमा को भी चोट पहुँचाते हैं। ऐसे परिजनों से निवेदन है कि अपने आने की पूर्व सूचना देकर और उपलब्ध व्यवस्था की जानकारी लेकर ही घर से चलें या किसी को शान्तिकुञ्ज भेजें।

परिजन अपने आवास की अन्यत्र व्यवस्था करके भी बिना किसी परेशानी के शान्तिकुञ्ज की समस्त गतिविधियों में भाग ले सकते हैं, तीर्थ सेवन का लाभ ले सकते हैं।

उपलब्ध आवास व्यवस्था की जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिए : 9258369704

राज्यपाल ने गायत्री विद्यापीठ के बैण्ड को सराहा

देहरादून। उत्तराखण्ड : 1 फरवरी को उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून में 74वें गणतंत्र दिवस समारोह का समापन 'गणतंत्र नमन' का आयोजन माननीय राज्यपाल की गरिमामयी उपस्थिति के साथ हुआ। उत्तराखण्ड स्काउट गाइड जनपद शान्तिकुञ्ज (गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज) की 33 सदस्यीय प्रज्ञा बैण्ड टीम ने भी इस समारोह में भाग लिया। प्रज्ञा बैण्ड ने राष्ट्र की आराधना करते हुए कई धुनें बजाईं। माननीय राज्यपाल लेफ्टि. जनरल श्री गुरमीत सिंह (से. नि.) सहित सभी ने इस प्रस्तुति को खूब सराहा। माननीय राज्यपाल जी ने बैण्ड प्रशिक्षक श्री सोमेश्वर ताण्डी एवं बैण्ड लीडर चि. अन्वित बल्कि को स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया।

अपनी शानदार सफलता से उत्साहित प्रज्ञा बैण्ड के सदस्य अपनी अभिभावक श्रद्धेया शैल जीजी से आशीर्वाद लेने पहुँचे। श्रद्धेया जीजी ने बच्चों को नित निरंतर सफलता के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा और आशीर्वाद दिया। गायत्री विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या, प्रधानाचार्य श्री सीताराम सिन्हा आदि ने इस उपलब्धि पर पूरी टीम को बधाई दी।

माननीय राज्यपाल गायत्री विद्यापीठ की टीम को स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.02.2023
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23